Document 290921 1.jpg 2019-20

भारतीय परम्परा में सौन्दर्य

(Aesthetics in Indian Tradition)

डॉ० अर्चना रानी

भारतीय परम्परा में सौन्दर्य

AESTHETICS IN INDIAN TRADITION

संपादक

डॉ० अर्चना रानी

विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग,
आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ उ०प्र०

सह-संपादक

डॉ० नाजिमा इरफान (असिस्टेण्ट प्रोफेसर)
डॉ० पूनम लता सिंह (असिस्टेण्ट प्रोफेसर)

प्राइम पब्लिशिंग हाऊस
मेरठ

प्राइम
भारतीय परम्परा में सौन्दर्य
Aesthetics in Indian Tradition

प्रकाशक
प्राइम पब्लिशिंग हाऊस
40 प्रथम तल, आधुनिक शॉपिंग कॉम्पलैक्स
शारदा रोड, मेरठ – 250002 (उ०प्र०)
फोन : 0121-2523989

प्रथम संस्करण : बसंत पंचमी, 30 जनवरी 2020

© सम्पादक

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य लेखकों के हैं, उससे प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिये वह किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं है।

ISBN : 978-93-86491-25-1

मूल्य : ₹ 1299.00

लेज़र टाइपसैटिंग :
सिंघल कम्प्यूटर्स, मेरठ।

मुद्रक :
सनी ऑफसैट प्रेस, मेरठ।

विषय-सूची

क्रं.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	शुंग कला सौन्दर्य : लोक कला का अनूठा प्रतिमान	डा0 नीलिमा गुप्ता	01-06
2.	संस्कृतवाङ्मय में नारीसौन्दर्य	डॉ0 पूनम लखनपाल	07-12
3.	भारतीय परम्परा में सौंदर्य	डॉ0 गीता अग्रवाल	13-18
4.	भारतीय सौन्दर्य चिन्तन एवं कला में सौन्दर्य दर्शन	डॉ0 अर्चना रानी	19-24
5.	भारतीय कला और सौन्दर्य–शास्त्र	डॉ0 पुनीता शर्मा	25-27
6.	सत्यम् शिवम् सुन्दरम्	डॉ0 ऋषिका पाण्डेय	28-32
7.	राजस्थानी कला परम्परा में सौन्दर्य दर्शन	डॉ0 नाजिमा इरफान	33-36
8.	सौन्दर्य की अप्रतिम उदाहरण कांगड़ा शैली	डॉ0 पूनमलता सिंह	37-39
9.	छायावादी लघुत्रयी के काव्य में सौन्दर्य चेतना	डॉ0 कंचन पुरी	40-48
10.	हिन्दी साहित्य में सौन्दर्य की अवधारणा	डॉ0 निशा गोयल	49-58
11.	सौन्दर्य बोध और निराला का नारी सौन्दर्य	सुरभि	59-63
12.	संस्कृत नाट्याभिनय में सौन्दर्याभिव्यक्ति	डॉ0 उपासना सिंह	64-67
13.	भारतीय कला परम्परा में सौन्दर्य	डॉ0 सुमन लता शर्मा	68-69
14.	भारतीय परम्परा में सौन्दर्य	डॉ0 किरन शर्मा	70-72
15.	भारतीय सांगीतिक परम्परा में सौन्दर्य	डॉ0 स्वाति शर्मा	73-75
16.	Psychological Aspects of Aesthetician	Dr. Sunita Singh	76-79
17.	कला और सौन्दर्य	डॉ0 अलका सोती	80-83
18.	भारतीय काव्य, साहित्य व कला में सौन्दर्य	श्रीमती प्रज्ञा केसरवानी	84-89
19.	पद्म श्री सुधीर रंजन खास्तगीर जी की कला में सौन्दर्य	डॉ0 प्रेमलता कश्यप	90-92
20.	मराठा राज्य की भित्तिचित्र परम्परा में नारी सौन्दर्य	डॉ0 सुषमा जैन	93-96
21.	अलवर के भित्ति चित्रों में सौन्दर्य दर्शन	डॉ0 वर्षा रानी	97-99

2 संस्कृतवाङ्मय में नारीसौन्दर्य

-डॉ० पूनम लखनपाल

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, संस्कृत विभाग, आर०जी०(पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

संस्कृतवाङ्मय मूर्त एवं अमूर्त भौतिक एवं भाव तत्त्वों को शाब्दिकशरीर प्रदान कर जगत् के समक्ष साक्षात् प्रस्तुत करने का अद्भुत कार्य करता है। वैदिक ऋचाओं की उषा हो या कालिदास की शकुन्तला, इन्दुमती, पार्वती, ऋतुएँ आदि हों, बाणभट्ट की महाश्वेता, कादम्बरी हो या चाण्डाल कन्या, ऋषियों एवं कवियों ने उसके सौन्दर्य को शब्दार्थचित्रों द्वारा समक्ष उपस्थित करा दिया। लक्ष्यग्रन्थों के नारी सौन्दर्यचित्रण ने लक्षणग्रन्थों के रचयिताओं को सौन्दर्य के मानदण्ड स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया। काव्यशास्त्रकारों ने विशेष रूप से अलघरशेखरकार केशवमित्र ने 'योषिद्वर्णन' के माध्यम से भारतीय सौन्दर्य परम्परा के इस पक्ष को पुष्ट किया है।

योषिद् वर्णन–

योषित् शब्द अमरकोष में स्त्री सामान्य के रूप में पर्यायवाचियों में दिया गया है, परन्तु अपने व्युत्पत्तिपरक अर्थ[1] में योषित् स्त्रीसामान्य नहीं, स्त्रीविशेष है। कालिदासकृत प्रयोग 'गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तम्'[2] सिद्ध करता है कि योषित् पद तरुणी को लक्षित करता है। अमरकोषकार ने 'मध्यमवयसिवर्त्तमाना'[3] को तरुणी कहा है। यह तरुणी ही योषित् हैं, जिसके शरीर व अंगों का वर्णन यहाँ अपेक्षित है। योषित् अनुयोगी है और उसके प्रतियोगी हैं चन्द्रकलादि –

चन्द्रकलाऽम्बुजदाम शिरीषं विद्युत्तारा कनकलता च।

दमनककाञ्चनयष्टी दीपःसर्वैरेभिर्योषिद्वर्ण्या।।[4]

चन्द्रकला, पद्ममाला, शिरीषपुष्प, विद्युत्तारा, स्वर्णलता, दमनक, स्वर्णयष्टि और दीपशिखा इन सभी से स्त्री का वर्णन करना चाहिए।

प्राचीन भारतीय काव्यपरम्परा में नारी के समस्त देह की उपमा प्रायः चन्द्रकला, कमल–रज्जु, शिरीष, दामिनी, तारा, स्वर्णलतिका दमनकयष्टि, कांचनयष्टि एवं दीपशिखा से दी गई है। कभी आम्रवृक्ष की शाखा[5], नदी,[6] तथा धनुष[7] से भी नारी को उपमित किया गया है। नारीदेह की कृशांगता, सुकुमारता तथा भंगिमा की तुलना लता बेलों से की गई है। मेघदूत की यक्षिणी प्रियंगु की भाँति छरहरी है[8]। इसी प्रकार मदन–पीड़ा से कृश शकुन्तला की देहयष्टि गर्म हवा से सुखाई हुई माधवी के समान शोचनीय लगती है।[9] नारीदेह में उज्ज्वलता, शीतलता एवं निर्मलता के गुणों की अभिव्यंजना के लिए कवियों ने 'चन्द्रिका' के उपमान का अधिकांशतः प्रयोग किया है। मैथिली को चन्द्रकान्ति की अधिष्ठात्री देवी के सदृश आकार वाली कहा गया है।[10]

12 संस्कृत नाट्याभिनय में सौन्दर्याभिव्यक्ति

-डॉ० उपासना सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, आर०जी०(पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

लोकस्वभाव की अभिनयाभिव्यक्ति ही नाट्य है। ललित–कलाओं में नाटक का स्थान सर्वोपरि है। इस चराचर जगत के प्रत्येक कण में एक सहृदय मनुष्य सौन्दर्य की अनुभूति करता है। नाट्यकला हृदय की वस्तु है जो हृदय से उत्पन्न होकर हृदय को ही प्रसन्न करती है। ललित–कलाओं की अधिष्ठातृ देवी, अपार सौन्दर्य की स्वामिनी एवं शिव की सहचरी स्वयं ललिता है। अतः उनके द्वारा प्रसूत कलाओं का प्रयोजन सौन्दर्य की सृष्टि के अतिरिक्त कुछ नहीं है। यह सौन्दर्य अखण्ड व्यष्टि स्वरूप सूक्ष्म एक रस है।

संस्कृत भाषा में 'कला' शब्द का प्रयोग शिल्प, मधुर, श्रवण–सुखद, आह्लादक आदि अनेक अर्थों में किया जाता है। सौन्दर्य की आनन्दमयी अनुभूति सौन्दर्यानुभूति है। नाट्य के सौन्दर्य की अनुभूति रस के माध्यम से आनन्द एवं सुख प्रदान करती है।

नाटक एक सामाजिक कला है, ये कला अभिनय को सर्वाध सुन्दर बनाने में सहयोग देती है। नाट्य में अभिनय की प्राणरूपा कला का स्थान सर्वोपरि है। नाटक अपने कृतित्व एवं प्रस्तुतिकरण दोनों पक्षों में शिल्प एवं कला सम्बन्धी विस्तृत परिप्रेक्ष्य को ग्रहण करता है। वस्तुतः नाट्यकला रस के उन्मीलन की प्रधान सहायिका हैं।

मुनियों ने नाट्यकला को देवताओं के लिए सौम्य (शान्त) नेत्रयज्ञ कहा है–

देवानामिदमामनन्ति मुनयः कान्तं क्रतुं चाक्षुषं
रूदेणेदमुमाकृतव्यतिकरे स्वाङ्गे विभक्तं द्विधा।
त्रैगुण्योद्भवमत्रलोकचरितं नानारसं दृश्यते
नाट्यं भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।।[1]

अर्थ – मुनियों ने नाट्यकला को देवताओं के लिए सौम्य (शान्त) नेत्रयज्ञ कहा है भगवान शंकर ने अपने अर्धनारी स्वरूप में इसे दो (लास्य और ताण्डव) भागों में विभक्त किया है। इस नाट्य में शृंङ्गार आदि नवो रस तथा सत्त्वादि तीन गुणों से युक्त लोगों का चरित्र परिलक्षित होता है। यही एक ऐसी नाट्यकला है जो भिन्न–भिन्न रूचिवाले लोगों को अनेक प्रकार से आनन्द प्रदान करती है।

संस्कृत नाट्यकला के प्रथम आचार्य भरतमुनि के अनुसार नाटक संगीत, नृत्य तथा कार्य व्यापार की एक सर्वतोमुखी कला है। नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक त्रैलोक्य के भावों का अनुकीर्तन है–

त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्य भावानुकीर्तनम्[2]

9 छायावादी लघुत्रयी के काव्य में सौन्दर्य चेतना

-डॉ० कंचन पुरी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आर०जी०(पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

सौन्दर्य, काव्य एवं अन्य ललित कलाओं का अनिवार्य तत्व है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक संवेगों के साथ है। वस्तुतः कलाकार की सौन्दर्य दृष्टि ही काव्य की सृजन भूमि निर्मित करती है। ज्ञान, विचार, अनुभूति की स्फुरणा के साथ ही वाक् तत्व स्पंदित हो उठता है। वाणी के विलास से ही तमसावृत संसार प्रकाश से भर उठता है। इसी वाक्तत्व का विलास है– साहित्य। किसी कृति की रचना हमारी परिष्कृत सौन्दर्य चेतना की ही स्फुरणा होती है। डॉ० नगेन्द्र ने इसी को साहित्य प्रेरणा हेतु माना है। सौन्दर्य चेतना ही कलाओं की जननी है।

सौन्दर्य चेतना जीवन की अत्यन्त व्यापक चेतना है। जीवन का विविध सौन्दर्य मनुष्य को सदा घेरे रहता है। सौन्दर्य की सान्द्र अनुभूति जब ललित अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रकट हो उठती है, तभी काव्य का उन्मेष होता है। वैसे तो मानव मात्र अपनी अनुभूति को हाव–भाव, प्रसन्नता–उल्लास, सुन्दर उक्तियों के माध्यम से व्यक्त करता है, किन्तु ये उक्तियां रचना का रूप धारण नहीं कर पाती। अनुभूति रचना में ढल सके इसके लिए विशिष्ट गुणों और शक्तियों की आवश्यकता होती है। कवि और कलाकार इन्हीं से सम्पन्न होता है। सौन्दर्य की अनुभूति होती ही कवि की रचनात्मक शक्तियां गतिशील हो उठती है। इन शक्तियों से ही कवि की अनुभूति काव्य में प्रतिफलित होती है।

हिन्दी साहित्य में छायावादी काव्य का स्वरूप बहुमुखी है। इसमें भावनाओं की अभिव्यक्ति में नारी संवेदना, उद्‌बुद्ध नारी की कल्पना, नयी संस्कृत तथा नये जागरण का स्पंदन है, किन्तु इन सब के मूल में व्यक्तिमूलक तथा सौन्दर्यमूल काव्य–चेतना है। छायावादी प्रवृत्तियों में प्रमुख है– सौन्दर्य भावना, आत्मनिष्ठता, प्रकृति का मानवीकरण, कल्पना की अधिकता तथा नारी के प्रति नूतन दृष्टिकोण। समीक्षकों ने सौन्दर्य भावना को इस युग की विशेष प्रवृत्ति ही नहीं बल्कि सर्वप्रमुख विशेषता माना है।

अस्तु छायावादी कवियों की विलक्षणता उनकी सौन्दर्यानुभूति व अभिव्यक्ति है।

सुमित्रानंदन पंतः–

"छायावाद भाव–बोध की दृष्टि से जहां वस्तु–बोध की भूमिका को छोड़कर एक ओर नवीन चैतन्य के शिखरों की ओर बढ़ा, वहां कला–बोध की दृष्टि से वह काव्यशास्त्रीय जड़, अलंकार युग की

10 हिन्दी साहित्य में सौन्दर्य की अवधारणा

-डॉ० निशा गोयल
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर०जी०(पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

मानव मन स्वभाव से ही सुन्दरता की ओर आकर्षित होता रहा है। पशु–पक्षियों में भी सौन्दर्य के प्रति आकर्षित होने की भावना पायी जाती है। पावस ऋतु की घनघोर घटाओं के सौन्दर्य को देखते ही मयूर विभोर होकर नृत्य में झूम उठता है, भ्रभर एवं तितलियाँ पुष्पित सौन्दर्य के ऊपर गुनगुनाती रहती हैं। हिमालय की अधिव्यका में हरीतिमा के सौन्दर्य पर मृग आत्मविर्सन कर छलांगे भरता है, तो फिर मानव मन में सौन्दर्य के प्रति हार्दिक रूप से आकर्षित होना अस्वभाविक नहीं है। सौन्दर्य के प्रति जब मानव–मन आकर्षित होता है तो सौन्दर्य के प्रति उसके मन में प्रेम की भावना जागृत हो जाती है। अतः सौन्दर्य एक ऐसा महान् तत्व हुआ जिसका अनुगमन प्रेम तत्व भी करता है।

सौन्दर्य शब्द की व्युत्पत्ति मूल रूप से "सुन्दर" शब्द से हुई है एवं "सुन्दर" शब्द "सुन्द" पूर्वक "रा" धातु से औणादिक "अच" प्रत्यय के योग से बना है।[1]

सुन्दर शब्द को "उन्द" धातु में "सु" उपसर्ग का योग करके तथा "अरन्" प्रत्यय जोड़कर भी सिद्ध किया गया है। "सु" उपसर्ग का अर्थ भली प्रकार एवं सुष्ठ होता है एवं "उन्द" शब्द का अर्थ "सरस" अथवा आर्द्र करना होता है और "अरन्" प्रत्ययकर्त्ता वाचक होता है।[2]

"सुन्दर" शब्द की व्युत्पत्ति "सु" पूर्वक "नन्द" धातु से भी मानी है। (सुन्दरयति इति सुन्दरम्) "नर" व्यक्ति वाचक संज्ञा में "सु" उपसर्ग जोड़ने से "सुन्दर" शब्द बनता है एवं "सुनर" से ही सुन्दर शब्द बना है।[3]

ऋग्वेद में भी सुन्दर शब्द की व्यापक चर्चा है। वहाँ भी "सुनर", "सुनरम्", "सुनरी" आदि अनेक शब्दों का प्रयोग सुन्दर शब्द के लिये ही किया गया है।[4]

सौन्दर्य इस विश्व का अति व्यापक तत्व है जिधर भी दृष्टिपात करें वहाँ तक अतुलित सौन्दर्य ही सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता है। कल–कल नाद करती हुई धारायें, चहचहाते हुए पशु–पक्षी, मुस्कराते हुए पुष्प, वर्षा ऋतु में झर–झर झरता अमृत रस, गगन–गामिनी मधुर ध्वनि किसके मन को मोहित नहीं करते, प्रकृति की ये अनुपम छटायें वास्तव में सौन्दर्य का विशाल पुंज हैं। मानव के आवश्यक अंग–नर–नारी, बाल, युवा एवं वृद्ध अपने मूल रूप में सौन्दर्य के विशाल रूप है। सौन्दर्य शब्द की वेदों में अपार चर्चा है–

"विश्यमस्या नानाभ व चक्षुसे जगज्जयोंतिवष्कृवोति सूनरी।
अपो महि व्ययति चक्षु से तभो ज्योतिष्कृणोति सूनरी।"[5]

4 भारतीय सौन्दर्य चिन्तन एवं कला में सौन्दर्य दर्शन

-डॉ० अर्चना रानी

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग, आर०जी०(पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

सारांश

मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ यह प्रश्न बार–बार उठता रहा है कि सौन्दर्य क्या है, और सौन्दर्य का अधिष्ठान क्या है? अतः सभी सभ्य, संस्कृत देशों के विचारकों, साहित्यकारों, कलाकारों ने सौन्दर्य सम्बन्धी विभिन्न धारणाओं का अपने–अपने दृष्टिकोणों से प्रतिपादन किया है। यह चिन्तन इस स्तर तक विकसित हुआ कि पाश्चात्य देशों, विशेषतः जर्मनी में तो सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetics) जैसे प्रथक् शास्त्रों का सृजन हो गया। भारत के विभिन्न सौन्दर्य–शास्त्रियों ने प्रकृति, मानव, काव्य एवं कला के प्रसंग में सौन्दर्य के स्वरुप पर विचार किया जो अलौकिक सौन्दर्य क्षेत्र का चिन्तन करता है। यही भारतीय सौन्दर्य–चिन्तन तथा कला में सौन्दर्य–दर्शन इस शोध–पत्र का आधार है।

शब्द–संकेत– सौन्दर्य, साहित्य, ललित कलायें, चिन्तन, अनुभूति, कलाकृति।

प्रस्तावना

समस्त कलाओं में एक मूलभूत अन्तर्सम्बन्ध निहित है चाहे वह चित्रकला हो, मूर्तिकला, वास्तुकला, साहित्य या संगीत। भारतीय सौन्दर्य शास्त्र का वास्तविक स्वरुप काव्य शास्त्र में प्राप्त होता है। यह एक ऐसा विषय है जिसमें सौन्दर्य का सम्पूर्ण क्षेत्र आ जाता है। समस्त कलायें किसी न किसी रुप में एक दूसरे पर आश्रित हैं और स्पष्ट रुप से कहें तो इनका क्षेत्र ललित कला है जिसे पूर्णतः व्यक्त करने वाला शब्द है कला–दर्शन। इस प्रकार सौन्दर्य शास्त्र ललित कलाओं के रुप में अभिव्यक्त सौन्दर्य से सम्बद्ध मौलिक प्रश्नों के तात्विक विवेचन और उसके परिणामी सिद्धान्तों की संहिता का नाम है।

भारतीय कला और संस्कृति का परस्पर सम्बन्ध मानव संस्कृति की उपज है। इसका उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। इस भावना की वृत्ति एवं मानसिक विकास हेतु ही विविध कलाओं का विकास हुआ। कला का शाब्दिक अर्थ है–किसी वस्तु का छोटा अंश। कला धातु से 'ध्वनि' व 'शब्द' का बोध होता है। ध्वनि का तात्पर्य है अव्यक्त से व्यक्त की ओर उन्मुख होना। कलाकार भी अपने अव्यक्त भावों को विभिन्न माध्यम से व्यक्त करता है। कला को इस प्रकार भी परिभाषित कर सकते हैं = क + ला अर्थात् क = कामदेव, सौन्दर्य, हर्ष, विलास तथा ला = देना, 'कलान्ति दयातीति कला' अर्थात् सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु ही कला है।

7 राजस्थानी कला परम्परा में सौन्दर्य दर्शन

-डॉ० नाजिमा इरफान
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

कला सौन्दर्य साधना है क्योंकि सौन्दर्य में एक अनोखी आकर्षण शक्ति विद्यमान होती है, जिसके कारण उसकी ओर मन का रूझान होता है। वास्तव में सौन्दर्य मानव का सहज गुण होता है। कला एवं सौन्दर्य चिन्तन अनवरत् बहती सरिता है। भारतवर्ष में सौन्दर्यतत्व मीमांसा ऋग्वेद से आरम्भ हुई है। डॉ० नगेन्द्र के अनुसार सौन्दर्य की अभिव्यक्ति एक भावात्मक अनुभूति है[1] तथा ईश्वर द्वारा निर्मित यह समस्त सृष्टि चारों ओर से कला और सौन्दर्य से परिपूर्ण है। भारतीय कला सौन्दर्य एक चिन्तन है।

भारतीय चित्रण परम्परा शैली के सौन्दर्य में विद्यमान है। भारतवर्ष में अति प्राचीन काल से चित्रकला का विकास हो चुका था। सिन्धु सभ्यता में जो चित्रकारी हुई वह पाँच हजार वर्ष पूर्व का इतिहास है। वेदों के समय भी चित्रों का चलन अवश्य रहा होगा। अजन्ता की गुफाओं की चित्रकला को देखकर यह ज्ञात होता है कि उस समय में चित्रकला अपने चरम अवस्था पर थी। यद्यपि गुप्तकाल के पश्चात् चित्रकला का ह्रास होता चला गया। पठानों के समय में तो चित्रकला लुप्त हो गयी। आगे चलकर इस्लाम में जब कला की ओर रूझान आया तथा व्यक्तित्व में उदारता आई, तब मुस्लिम समाज भी कला की ओर उन्मुख होने लगा। तब चित्रकला की धारा में मानव मन हरा–भरा हो गया। मुगलकाल में चित्रकला का रूप निखर उठा। राजस्थान में भी चित्रकला पनपने लगी।

राजस्थानी चित्रकला के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान मेवाड़ का था। जैन शैली सातवीं शताब्दी में अपने चरम पर थी। राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र निकटवर्ती होने के कारण वहाँ जो चित्रकला पनपी उस पर पूरी तरह जैन शैली की छाप थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राजस्थानी चित्रकला का इतिहास लगभग चार सौ वर्ष पुराना है।

भौगोलिक स्थिति, स्थानीय परिवेश, मुगल शैली एवं जैन शैली के योग से राजस्थान में विभिन्न शैलियों का जो विकास हुआ उसे देखकर भारतीय चित्रकला मन्त्र मुग्ध हो उठी। राजस्थानी चित्र शैलियों में मुगल शैली के प्रभाव के साथ ही अन्तर भी बहुत था। मुगल शैली अगर शरीर थी तो राजस्थान शैली आत्मा।[2] राजस्थान के चित्रकार सही अर्थों में चित्रकार थे। राजस्थानी शैली में अजन्ता की भावना थी। राजस्थानी चित्रों के विषय में अबुलफजल का कहना है कि वस्तुओं के विषय में हमारा जो ज्ञान है ये चित्र उससे बहुत आगे का संकेत करते हैं। इन चित्रों के द्वारा राजस्थानी चित्रकारों के संयम, वैराग्य, पवित्रता, योगाचार, कोमलता और क्रोध सबका प्रतिनिधित्व करता है।

8 सौन्दर्य की अप्रतिम उदाहरण कांगड़ा शैली

-डॉ० पूनमलता सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

भारतीय चित्रकला अपनी अविरल धारा में अनेक पड़ावों को पार करके सौन्दर्य के सौष्ठव तक पहुँची है जिसका कोई सानी विश्व के कला इतिहास में भी न रहा, अठारहवीं शती में राजपूत राजाओं के समाश्रय में पल्लवित पोषित होने वाली कांगड़ा चित्र शैली ऐसी ही एक शैली है। कांगड़ा चित्र शैली भारतीय कला के आदर्शों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो कलाप्रेमियों को मन्त्रमुग्ध कर देती है। किसी भी देशकाल की कला हो वह अपने भौगोलिक, सांस्कृतिक परिवेश से सदैव प्रभावित होती है, मेरा विश्वास है कि धौलधार की श्वेत पहाड़ियों और वहाँ की हरीतिमा के प्राकृतिक सौन्दर्य ने उस समय कलाकारों को इतनी सुन्दर कृतियाँ रचने के लिये अवश्य ही बाध्य किया होगा तभी कलाकार सौन्दर्य का संसार अपनी कलाकृतियों में बसा सके होंगे।

कांगड़ा की सत्ता 13वीं शती से 18वीं शती तक लगभग 500 राजाओं के हाथों हस्तानान्तरित होती रही परन्तु 1775 में जब कांगड़ा की गद्दी पर महाराजा संसारचन्द आसीन हुए तब कांगड़ा राज्य में कलाकारों व शिल्पकारों को पर्याप्त सम्मान प्राप्त हुआ। महाराजा संसारचन्द कलानुरागी और पारखी व्यक्ति थे उनके समय कांगड़ा की चित्रकला अपने चरम सौन्दर्य को प्राप्त कर सकी। कांगड़ा के तत्कालीन राजा वैष्णव भक्ति से ओतप्रोत थे इसी कारण कलाकारों ने भी उनकी आस्था को तूलिका के माध्यम से मुखरित कर दिया। भारतीय चित्रकला सदैव धर्म की सहधर्मिणी बनकर चली थी इसी कारण कांगड़ा के चित्रकार भी कृष्ण भक्ति परंपरा से स्वयं को विलग न कर सके, कांगड़ा कलाकार महज शिल्पकार नहीं थे, वे ऐसे अनुप्रेरित व्यक्ति थे जो वास्तविक धार्मिक व कवित्तमय जीवन व्यतीत करते थे, जिसे हम नैसर्गिक जीवन की संज्ञा दे सकते हैं। यह एक बड़ा तत्व है जिससे हमें मुगल चित्रकला के मुकाबले कांगड़ा चित्रकला की उच्चस्तरीय उपलब्धि का पता चलता है। भक्त कवियों द्वारा भक्ति काव्यधारा के अन्तर्गत जयदेव, चैतन्य, सूरदास, केशवदास और मीराबाई आदि की मौलिक और रसात्मक कृतियों से जनता में ऐसी भावाभिव्यक्ति हुई जिससे पहाड़ी क्षेत्र प्रकृति के देवालय तो ये ही चित्रकला की रंगशालाएँ भी बन गए।

वैष्णव धर्म दो शाखाओं में विभक्त था रामाश्रयी एवं कृष्णाश्रयी, कांगड़ा के राजा, प्रजा व चित्रकार कृष्णाश्रयी शाखा का अनुसरण करते थे। भगवान कृष्ण उनके इष्ट थे, कृष्ण जो कि परमात्मा हैं, दर्शन हैं जीवन का सार है तत्कालीन कवियों और कलाकारों की प्रेरणा है।

कलाकारों ने भगवान कृष्ण की अनेकानेक चित्रावलियाँ सृजित कीं, कांगड़ा शैली के चित्र कृष्ण और गोपिकाओं, सखियों तथा राधा के साथ उनकी विभिन्न लीलाओं का वर्णन करते हैं। जयदेव का

16 Psychological Aspects of Aesthetician

Dr. Sunita Singh
Assistant Professor, Psychology Department, R.G.(P.G.) College, Meerut

Aesthetic term is connected with the term "beauty" and beauty itself is the impression of something positive and pleasant. Aesthetics has been considered as the subfield of philosophy that studies the experience of beautiful. In psychology, aesthetics is studied in the context of relation to the physiology and psychology of perception.

When we use 'aesthetic' term in our life, actually it expresses the notion of something looks attractive, appealing and feels beautiful. It is directly connected with the appearance of person or thing. A very similar term is 'aesthetic sense' which is actually shows the sense of person who is perceiving beauty of something. It may vary person to person this is why some people are appreciated for their good aesthetic sense in art, nature and good taste. Such people are called aesthetician. It is subjective and such people are highly sensitive towards the critical reflection of art, culture and nature. So here we see two different aspects of aesthetic. One is related to the outer characteristics of something and the second aspect is related to the orientation and a sense of a person of perceiving critical higher level of beauty of objects. Second aspect is more explorative and more psychological with vast variation and is highly correlated with personality traits of a person. We all like music, dance, singing, art and other artistic streams but we also notice that such people have extra ordinary ability to relate or create things in more creative and in most unusual ways. This is not so that only aestheticians can response towards the beauty of surroundings, but aestheticians may have deep sense of observing representational qualities of the object. Dr. Silverman (2001) has said *"Aesthetic analysis is a careful investigation of the qualities which belong to objects and events that evoke an aesthetic response. The aesthetic response is the thoughts and feelings initiated because of the character of these qualities and the particular ways they are organized and experienced perceptually".*

Various components play fundamental role in the aesthetic critical analysis such as emotional, cognitive, interest and awareness in order to initiate aesthetic response.

13 भारतीय कला परम्परा में सौन्दर्य

-डॉ० (श्रीमती) सुमन लता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग, आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

भारतीय कला अपनी प्राचीनता तथा विविधता के लिये विख्यात रही है। भारतीय कला में सभ्यता के उदय से लेकर वर्तमान तक के सामान्य व धार्मिक भवनों, मूर्तियों, चित्रों, नृत्य व संगीत आदि को शामिल किया जाता है।

भारत के इतिहास के प्रारंभिक काल में ही कला की परिपक्वता के साक्षात् प्रमाण हैं। खुदाई में असंख्य केन्द्रों से प्राप्त सभ्यता के अवशेषों में अनेक ऐसे तथ्य सामने आये हैं, जिन्हें देखकर मन यह मानने को बाध्य हो जाता है कि हमारे पूर्वज उच्च कोटि के कलाकार थे। यद्यपि भारत के दीर्घकालिक इतिहास में ऐसे काल भी आये जब कला का ह्रास होने लगता अथवा वह अपने मार्ग से भटकती प्रतीत हुई तथापि सामान्य तौर पर यह देखा गया कि भारतीय जनमानस कला को अपने जीवन का एक अंश मानकर चला है। वह कला का केवल विकास व निर्माण ही नहीं करता, बल्कि कला को जीता है। उसकी जीवन शैली कला से परिपूर्ण है।

कला सौन्दर्य साधना है। सौन्दर्य में एक अनूठी आकर्षण शक्ति है। उसकी ओर मन का सहज रुझान होता है। वास्तव में सौन्दर्य को मानव का सहज गुण भी कहा जा सकता है। कला का उद्गम 'कल' धातु से निष्पन्न होता है, इसका अर्थ है चलना, गति, स्पन्दन। कला ने सभ्यता को आदिकाल से सौन्दर्य – शृंगार – साज – सज्जा से सजाया सँवारा है।

भारतीय कला परम्परा हमेशा सौन्दर्य अर्थात् 'सत्यम्–शिवं–सुन्दरम्' पर आधारित रही है। कला में सौन्दर्य की यथार्थता को ईश्वरीय आनन्द माना जाता है। कला में समाविष्ट अगाध सौन्दर्य का आनन्द दर्शक व श्रोता अपनी दृष्टि अथवा कर्णेन्द्रिय से कर लेता है लेकिन कलाकार जब किसी कला की रचना करता है तो उस समय मन, वाणी और बुद्धि से वह स्वयं कल्पनालोक में रहता है। उसकी रचनात्मकता का माध्यम उसके अन्तर्मन को बार–बार सौन्दर्य की ओर प्रेरित करता है।

कला का मूल अन्ततः आत्मा है। आत्म साक्षात्कार करने वाले मंत्रदृष्टा ऋषियों ने सत्य का साक्षात्कार किया था, उन्होंने सत्य को देखा था। उन्होंने बताया कि आत्मा मन बुद्धि की पहुँच से भी पार है। वहाँ वाणी भी नहीं पहुँचती। इन्द्रियाँ तो स्वभाव से ही बाहर की ओर दौड़ने वाली हैं। आत्मा के दर्शन का उत्कट अभिलाषी तो कोई धीर होता है, जो आवृत्त चक्षु–इन्द्रियों को अन्तर्मुखी

14 भारतीय परम्परा में सौन्दर्य

-डॉ० किरन शर्मा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संगीत विभाग, आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

सौन्दर्य एक ईश्वरीय गुण है तथा सौन्दर्य चेतना मानव के अन्तःकरण की परम निधि है। मानव मन मूलतः सौन्दर्य प्रेमी होने के कारण ही कला का उद्यव हुआ। ललित कलाएँ मानव के अन्तःकरण मे व्याब्त विविध भावों की सौन्दयात्मिक अभिव्यक्ति हैं। सौन्दर्य सृजन की प्रेरणा का आधार प्रकृति, के सुन्दर दृश्य संगीत की मधुर ध्वनि वास्तुकला, शिल्पकला, काव्य रचना इत्यादि कुछ भी हो सकता है, सबका ध्येय एक ही है–आनंद की प्राप्ति। हम कह सकते हैं कि अनेक कलाओं का सृजन तथा विकास मनुष्य के ऐन्द्रिय–मानसिक सौन्दर्यानुराग तथा परिष्कृत सौन्दर्य चेतना का ही परिणाम है।

भारतीय परम्परा में विविधि कलाओं का उल्लेख प्रारंभ से ही प्राप्त होता है। इनका आधार वेद हैं। वेदों में वास्तु, मूर्ति, चित्र, संगीत तथा काव्य, पाँच कलाओं का उल्लेख मिलता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार वैदिक ऋषि मानव शिल्प की अपेक्षा देव शिल्प के प्रति अधिक आकृष्ट था। रामायण–महाभारत में भी वास्तु शिल्प, चित्र गीत काव्य सभी कलाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। कला का लक्ष्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति है। वह सौन्दर्य जो देखने या सुनने वाले मन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। समस्त कलाओं का प्रेरणा स्रोत मनुष्य की सौन्दर्य प्रियता की उपलब्धि तथा आनंद की प्रतीति है।

भारतीय सौन्दर्य चेतना कलाओं के माध्यम से ही अभिव्यक्त हुई है। ललित कलाएँ भारतीयों की सूक्ष्म एवं परिष्कृत सौन्दर्य भावना की प्रतीक है। भारतीय वाडमय में संस्कृत ग्रंथो में सौन्दर्य शब्द का उल्लेख नहीं है किंतु उसके पर्याय शब्दों का उल्लेख अवश्य प्राप्त होता है जैसे–

सुन्दर, रूचिरं, चारू, सुषमं, साधु, शोभनम्,
कान्त, मनोरंम, रूच्यं, मनोज्ञं, मंजु, मंजुलम"
अभीष्टेऽभीप्सितं, हृदयं, दयितं, वल्लभं, प्रियम्। (अमरकोष)

ऋग्वेद में सौन्दर्य को 'श्री' नाम से संबोधित किया गया है। वाचस्पत्य कोष में सुन्दर की व्युत्पत्ति सु+उन्द् +अरन् इस प्रकार से की गई है जिसका अर्थ है नयनो को सिक्त अर्थात सुख प्रदान करने वाला। सौन्दर्य का आकर्षण तीव्र है जब कोई कला भौतिक अथवा मानसिक रूप से एन्द्रिय आनंद की अनुभूति कराती है तो वही सौन्दर्य है।

15 भारतीय सांगीतिक परम्परा में सौन्दर्य

-डॉ० स्वाति शर्मा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संगीत विभाग, आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

भारतीय परम्पराएँ सदैव मानव कल्याण के प्रति सजग रही हैं। वातावरण का प्रभाव अच्छा एवं बुरा दोनों ही होते हैं। मंगलकारी ओजस्विता भरने वाली मन को प्रफुल्लित करने वाली परम्पराएँ जो चिर काल से भारत को दैदीप्यमान कर रही हैं वो सब वर्तमान में भी अपने सशक्त अस्तित्व की परिचायक रही है। अन्य देशों की तुलना में जब हम भारत पर ध्यान देते हैं, तो हम पाते हैं कि भारत में एक विशेष आकर्षण विद्यमान है। ये आकर्षण भारतीय परम्पराओं के रूप में या भारतीय नैतिक मूल्यों के रूप में दृष्टिगोचर होता है। भारतीय नैतिक जीवन के आरम्भ से ही चली आ रही कुछ परिपाटियाँ आज भी हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं, क्योंकि उन परम्पराओं के पीछे कुछ गूढ़ रहस्य छिपे हैं एवं भारतीय परम्पराओं को वैज्ञानिक तथ्य भी पुष्ट कर रहे हैं।

विश्व का यश और वैभव है भारत। इसी कारण विश्व के दरबार में भारतीय समाज तथा परम्पराओं का कोई परिचय फिर से देने की सम्भवतः जरूरत ही नहीं है, फिर भी भारतीय शिष्टाचार परिचय देने के पक्ष में ही हैं। राँस के अनुसार, "परम्परा का अर्थ है, हिमालय से लेकर हिन्द महासागर तक विस्तृत यह उपमहाद्वीप 'भारतवर्ष' अर्थात् 'भरत का देश' नाम से विख्यात है। पौराणिक गाथाओं के अनुसार इस देश पर 'भरत' नाम का एक प्रतापी राजा राज्य करता था, इसलिए इस देश का नाम उसी राजा के नाम पर भारत वर्ष पड़ा। भारतीय परम्पराएँ अगणित हैं, इन परम्पराओं में विविधता होते हुए भी एकता है। ये परम्पराएँ, सामाजिक संरचना को बनाती है, परम्पराओं तथा सामाजिक संरचना का यह गठबंधन भारतीय समाज है। देखा जाये तो भारतीय जनता की अपनी एक संस्कृति है। यह संस्कृति, दर्शन, परम्परा, इतिहास, पौराणिक व कल्पित कथाओं के मेलजोल से तैयार हुई है और इन विविध अंगों को एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

भारतीय धर्म का प्रतिनिधित्व सर्वप्रथम 'ऊँ' नामक वर्ण करता है। यह माना जाता है कि सम्पूर्ण विश्व की शाश्वतता इस एक ऊँ की ध्वनि में समाहित है। ऊँकार को नित्य अक्षर प्रणव में अकार, उकार, मकार–इन तीनों मात्राओं के रूप में बताया गया है तथा इन मात्राओं के अतिरिक्त जो बिन्दुरूपा नित्य अर्धमात्रा है। इन सभी को एक शक्ति का रुप बताया गया है जो कि उच्चारण करने पर शांति प्रदान करती हैं ऊँ के अतिरिक्त भारतीय परम्पराओं में स्वस्तिक का भी अपना महत्व है। स्वस्तिक के चिन्ह का महत्व केवल भारतीय परम्पराओं में ही नहीं, अपितु पाश्चात्य देशों में भी है। व्यवसायिक रुप से इस चिन्ह को बही खातों में, वैवाहिक वस्त्रों में, कोई भी हवन या धार्मिक आयोजन में शुभ व सौभाग्य का प्रतीक के रुप में करते हैं।

2019-20

समकालीन साहित्य और सिनेमा

संपादक
डॉ. सीमा शर्मा

डॉ. सीमा शर्मा

दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.फिल्., पी-एच.डी., मेरठ विश्वविद्यालय से बी.एड., पोस्ट एम.ए. डिप्लोमा अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, पत्रकारिता एवं जनसंचार (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान) पी.जी. डिप्लोमा अनुवाद -भारतीय विद्या भवन

शोध कार्य : साठोत्तर हिंदी नाटकों में विडंबना की रचनात्मक भूमिका, मैत्रेयी पुष्पा कृत इदन्नम में नारी चेतना, भाषा शिक्षण में कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन से उत्पन्न व्यवधान, हिन्दी सिनेमा में अभिव्यक्त आपदा का स्वरूप।

शोध निर्देशन : नाटक और विज्ञापन जगत पर।

प्रकाशित लेख : समकालीन हिन्दी कहानी में स्त्री अस्मिता; विज्ञापन की भाषा, स्नातकोत्तर हिन्दी कविता में राजनीतिक विमर्श, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में राजनीतिक विमर्श, भक्ति काव्य में स्त्रीवादी चिंतन, संवेदना के धरातल पर मॉरीशस के बाल नाटक साहित्य।

अनेक अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रपत्र वाचन। परिचर्चा (नया ज्ञानोदय), ज्ञानपीठ प्रकाशन (पंचायत)।

- दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का संयोजन, संचालन।

- नए संवाद शोध विषयक अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादीय मंडल में।

नाट्य निर्देशन : इला प्रभाकर श्रोत्रिय, पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ - उपेन्द्रनाथ अश्क, शुतुरमुर्ग -ज्ञानदेव अग्निहोत्री, कोर्ट मार्शल - स्वदेश दीपक

- ज्ञानवाणी चैनल पर रेडियो वार्ता प्रसारित। भाषा साहित्य और संस्कृति का विकास, कविता से क्रान्ति तक।

सम्मान पुरस्कार : एम्बेसडर ऑफ पीस अवार्ड, यूनीवर्सल पीस फेडरेशन, वर्ल्ड पी.एन.जी.ओ., साउथ क्लब, कोरिया।

सम्प्रति : जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत।

संपर्क : seminar.jdmc@gmail.com

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद
www.sahityasanchay.com
e-mail : sahityasanchay@gmail.com
Mob. : 9871418244, 9136175560

₹ 150
ISBN : 978-93-88011-73-0
9789388011730

हिंदी साहित्य में छोटे व बड़े पर्दे का योगदान

डॉ. कंचन पुरी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा हिंदी
रघुनाथ गर्ल्स (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

साहित्य शब्द सहित से बना है–जिसका अर्थ है साथ-साथ या हित के साथ। साहित्य समाज से जुड़ा और समाज से जुड़ा प्रत्येक पहलू साहित्य से प्रभावित होता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण 'रामचरितमानस' को ले सकते हैं। रामचरितमानस हिंदी साहित्य का एक अनुपम ग्रंथ है। राम के राज्य को हमने नहीं देखा लेकिन आज भी किसी आदर्श के लिए रामचरितमानस के उदाहरण दिए जाते हैं। हिंदी साहित्य पर दृष्टि डालें तो 'भागवत गीता', 'रामचरितमानस', महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ कबीर, प्रेमचंद, प्रसाद के साहित्य ने लोगों पर (समाज) पर अपना अत्यधिक प्रभाव छोड़ा है।

साहित्य अपना प्रभाव छोड़ता है इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन दूसरा पहलू यह भी है कि साहित्य भी समाज से प्रभावित होता है। साहित्य अपनी सामग्री (कहानी, कथावस्तु, तथ्य, वातावरण) समाज से ही लेता है। जिस तरह का समाज होगा वैसा ही साहित्य भी निकलकर आएगा। इसीलिए कहा जाता है कि अगर किसी समाज को समझना है तो उसके साहित्य को पढ़ना, समझना, अति आवश्यक है।

छोटे पर्दे अर्थात् टेलीविजन बड़े पर्दे अर्थात् सिनेमा पर दृष्टि डालें तो ये भी साहित्य से अछूते नहीं हैं। प्रारंभ में तो छोटे व बड़े पर्दे ने अपनी सामग्री साहित्य से ही ली। महाभारत और रामायण जैसे धारावाहिकों ने छोटे पर्दे को लोकप्रिय बनाया। वहीं सिनेमा अर्थात् बड़े पर्दे को भी हिंदी साहित्य ने भरपूर सामग्री उपलब्ध कराई।

Hindi Deptt
2019-20

हिंदी साहित्य विविध आयाम

संपादक
प्रो. गोविन्द सोनी
डॉ. नरेश कुमार सिहाग

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद

© संपादक

ISBN : 978-81-942948-0-1

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : पवन वर्मा

मूल्य : ₹ 300/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 11/- (अन्य देश)

HINDI SAHITYA VIVIDH AAYAM
Edited by Prof. Govind Soni, Dr. Naresh Kumar Sihag

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अनुक्रम

1. दलित आत्मकथाएँ — 13
   प्रो. गोविन्द सोनी/ डॉ. नरेश कुमार सिहाग
2. हिन्दी गज़ल में पर्यावरण विमर्श — 17
   डॉ. सविता धुड़केवार
3. वैदिक सभ्यता — 24
   हरिप्रकाश शर्मा
4. राजनीति विषयक प्रकरण ग्रंथ अर्थशास्त्र में 'अमात्य' विमर्श — 34
   खुशवन्त माली
5. कथ्य-कथन की एक शैली-आख्यानवाद — 41
   शम्भू राम
6. अमरकांत के कथा-साहित्य में आर्थिक चेतना — 46
   आर. देवकी
7. रामायण और भारतीय दर्शन का वैश्विक प्रसार — 52
   तरुण कुमार
8. राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-साहित्य में प्रतिबिम्बित सामाजिक परिस्थितियाँ — 56
   डॉ. शिखा सिंदवानी
9. नारी विमर्श राधाचरितम के विशेष संदर्भ में — 63
   वर्षा रानी
10. हिन्दी के अभ्युदय में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान — 68
    संगीता/डॉ. सुनीता
11. प्रेमचन्द के साहित्य में किसान एक विमर्श — 76
    डॉ. सुनीता
12. हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं की आत्मकथाएँ...परिदृश्य — 81
    सुप्रिया प्रसाद
13. वेद-विमर्श — 89
    डॉ. सीमा देवी

हिन्दी के अभ्युदय में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान

संगीता/डॉ. सुनीता
आर.जी. (पी.जी.) कॉलेज
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश
Email:-Sangeetaraj492@gmail.com

प्रस्तावना

जब अन्तर जगत का सत्य बर्हिजगत के सत्य के सम्पर्क में आकर संवेदना या सहानुभूति उत्पन्न करता है, तभी साहित्य की सशष्टि होती है। भाषा के माध्यम से अपने अतरंग की अनुभूति अभिव्यक्ति कराने वाली ललित कला 'काव्य' अथवा 'साहित्य' कहलाती है। साहित्य की व्युत्पित्ति को ध्यान में रखकर इस शब्द के अनेक अर्थ प्रस्तुत किए गए है।

'यत्' प्रत्यय के योग से साहित्य शब्द की उत्पत्ति हुई है। शब्द और अर्थ का समान भाव ही साहित्य है। साहित्य वाड्मय संसार है, जिसमें प्रवासी हिन्दी साहित्य एक प्रमुख स्तंभ है। हिन्दी साहित्य को साहित्य से विलग नहीं किया जा सकता "प्रवासी एक ऐसा शब्द है। जो अपना भी लगता है और पराया भी। यह निकटता भी दर्शाता है और दूरी भी। शायद महाभारत में इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले किया था। मगर हिन्दी साहित्य में इस शब्द के नए अर्थ गढ़े गए हैं और एक नया खांचा तैयार किया गया है जिसे कहा गया है-प्रवासी साहित्य।"[1]

'प्रवास' शब्द मानव जीवन एवं स्थानांतरण का प्रतीक है। मानव अपनी सुविधानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर आगमन करता है, परन्तु उसकी संवेदना अपने मूल स्थान से जुड़ी रहती है। 'प्रवास' शब्द 'वास' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से बना है। 'वास' का अर्थ निवास करने से लिया जाता है और 'प्र' उपसर्ग लगाने से इसका अर्थ बदल जाता है।

'प्रवास' शब्द का पूर्ण अर्थ है अपने मूल स्थान या देश में न रहकर अन्य स्थानीय देश में रहना।

प्रेमचन्द के साहित्य में किसान एक विमर्श

डॉ. सुनीता
एसोसिएट प्रोफेसर, (हिन्दी विभाग)
आर.जी. (पी.जी.) कॉलेज
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश

प्रस्तावना

हमारा देश एक कृषि प्रदान देश है, और यहाँ 70: जनता आज भी कृषि पर ही निर्भर है। और यह आंकड़ा कोई आज का नहीं है आजादी के समय भी यही आँकड़ा था और आज भी। देश को आजाद हुये कई वर्ष बीत गये कई सरकारें आइं और गईं लेकिन इतने सालों के बाद भी गाँव का किसान आज अपनी मूलभूत आवश्यकताओं से बहुत दूर रहता है। किसान को अन्नदाता भी कहा जाता है लेकिन यह एक विडंमना ही है कि उसका दाता कोई और ही होता है। सरकारें बदली स्कीमें बदली, योजनायें बदली लेकिन एक कृषक वहीं खड़ा है जहाँ 50 साल पहले खड़ा था। यह माना जा सकता है कि आज का युग एक वैज्ञानिक युग है नई-नई तकनीकियाँ आ गयीं, नई योजनाएं लागू हो गयी हैं लेकिन एक अनपढ़ गाँव का किसान इन सुविधाओं का लाभ नहीं ले पा रहा है और न ही सही ढंग से कृषि कार्य कर पा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप आज भी वह कर्ज से दबा है।

किसानों की आत्महत्या के बारे मे अगर बात करें तो हर साल शर्मनाक आंकड़े सामने आ रहे हैं। पिछली साल टाइम्स ऑफ इण्डिया की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल मई महीने में केन्द्र सरकार ने उच्चतम न्यायालय को बताया था कि किसानों की आय और सामाजिक सुरक्षा बढ़ाने की तमाम कोशिशों के बावजूद साल 2013 से हर साल 12,000 हजार से ज्यादा किसान आत्महत्या कर रहें हैं

आज मार्केट में सारी वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे हैं लेकिन किसान की वस्तुऐं मिट्टी के भाव। अभी 2014 की बात है किसानों ने लहसुन की फसल को खात के रूप में दोबारा से गड्ढों में डाल दिया था और सड़ने दिया आखिर क्यों ? ऐसा हुआ इसका अंदाजा शायद ही कोई लगा पाये। उस समय उस किसान के हृदय पटल पर क्या वीत रही होगी जिसने खुद भूखे रह-रह कर उसकी बुआई की, धूप

ओ३म्

साहित्य के परिप्रेक्ष्य में किन्नर विमर्श

सम्पादिका :
डॉ. सानिया गुप्ता
एम.ए. एम.फिल. पी.एच.डी.

प्रकाशक :
गीना प्रकाशन
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

साहित्य के परिप्रेक्ष्य में किन्नर विमर्श

ISBN - 978-81-936150-7-2

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email :ginapk222@gmail.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price : 501/-

Sahitya Ke Pripekshy Me Kinner Vimarsh

Dr. Sania Gupta

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
I	भूमिका	डॉ. नरेश कुमार सिहाग	5–5
II	प्राक्कथन	डॉ. सानिया गुप्ता	6–7
1.	किन्नर – एक दृष्टि	अमिता शर्मा	8–10
2.	किन्नर विमर्श : एक अध्ययन	डॉ. एकता रानी	11–14
3.	किन्नरों के रीति–रिवाज	डॉ. सानिया गुप्ता	15–18
4.	अनुसूया त्यागी कृत 'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास में किन्नर विमर्श	नीलम देवी	19–23
5.	साहित्य के परिप्रेक्ष्य में किन्नर विमर्श	रेवा रानी	24–27
6.	किन्नर समाज में शिक्षा का महत्व	शिवाली गुप्ता	28–29
7.	किन्नरों की पहचान	अकशित राना	30–33
8.	किन्नर एक फरिश्ता	प्रो. गोविन्द सोनी	34–37
9.	नालासोपारा में किन्नर विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	38–45
10.	राजनीति और किन्नर	डॉ. रेखा सोनी	46–49
11.	संत शिरोमणि रामकथा वाचक मुरारी बापू कृत 'मानस–किन्नर' में किन्नर	सुमन रानी प्रो.मन्जुनाथ एन. अंबिग	50–54
12.	संवेदनहीनता के मरुस्थल में (साक्षात्कार)	कल्पना	55–63
13.	किन्नर – विशेष संदर्भ महाभारत	डॉ. विजय महादेव गाडे	64–70
14.	'किन्नर कथा' उपन्यास में चित्रित किन्नर जीवन	सानिया गुप्ता	71–76
15.	किन्नर : सामाजिक सन्दर्भ में	डॉ. अमृता सिंह प्रो. जोहरा अफजल	77–87
16.	किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति व बदलती तस्वीर	डॉ0 उषा गोदारा	88–90

17. किन्नरों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, रीति रिवाज और समाज में उनकी मान्यताएँ	शिवकरण निमल	91–95
18. किन्नर : सांस्कृतिक संदर्भ में	डॉ. प्रवीण बाला	96–104
19. भारतीय साहित्य में किन्नर विमर्श	दिप्तीबह्न एम.प्रजापति	105–107
20. किन्नर सामाजिक संदर्भो में	अनिल कुमार साह	106–113
21. 21वी शताब्दी में किन्नर एक अभिशाप क्यों?	संगीता	
	डॉ० सुनीता	114–119
22. सम्मान का अधिकारी किन्नर समाज	डॉ. नरेश कुमार सिहाग	120–126
23. किन्नर : कल और आज	शर्मिला देवी	127–133
24. किन्नर जीवन की त्रासदी : 'मैं पायल' उपन्यास	डॉ. वनीता कुमारी	134–145
25. हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श	डॉ. नसरीन जान	146–152
26. Anjum the Unconsoled : Life of a Transgender	Prof.Gopal Sharma	153-158

(21)

21वी शताब्दी में किन्नर एक अभिशाप क्यों?

प्रस्तावना– हमारे भारतीय समाज गें एक बहुत पुरानी कहावत है, कि 'अगर अपना हक न मिले तो उसे छीन लेना वाहिए। यही बात आज हमारे तीसरे लिंग अर्थात किन्नर समाज पर लागू होती है। कोई भी व्यक्ति किसी जाति, धर्म या परिवार का हो जब तक वो खुद उभरने की कोशिश नही करेगा तब तक उसे कोई भी गन्दी मानसिकता वाले दलदल से बाहर नही निकाल सकता है।

21 वी सदी में अगर देखा जाए तो भारतीय समाज में किन्नरों से ज्यादा दयनीय स्थिति किसी की नही है क्यों?। इसका भी एक बहुत बड़ा कारण है वो कारण है किन्नर समुदाय की संकुचित सोच। जब तक वो खुद को नाचने गाने के पेशे से बाहर नही निकालेंगे और अपनी संख्या में इजाफा करने वाली सोच को नही बदलेंगे तब तक किन्नरों पर विमर्श कितना भी करलो, कोई बदलाव होने वाला नही है।

2011 की जनगणना के अनुसार समस्त भारत में लगभग 4.9 लाख किन्नर है, जिसमें से 1 लाख 37 हजार हमारे उत्तर प्रदेश से हैं। और 2011 की उसी जनगणना के अनुसार सामान्य जनसंख्या में से शिक्षित लोगों की संख्या 74 प्रतिशत है, जबकि किन्नरों में यही संख्या 46 प्रतिशत ही है।

हाल ही में केरल में 'लैंगिक समानता' पर प्रथम अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। 12 से 14 नबम्वर तक चले इस सम्मेलन के उदघाटन के लिए केरल राज्य के मुख्य सचिव 'जीजे थॉमसन' ने राज्य की 'ट्रांसजेंडर नीति' की एक विख्यात ट्रांसजेंडर कार्यकर्ता 'आक्काई पदमशाली' को भेंट करते हुए इस नीति का अनावरण किया। हमारे राज्य सरकारों के साथ–साथ भारत सरकार भी इनके स्वरूप को बदलने का भरसक प्रयास कर रही है।

जैनेटिक डिफेक्ट के कारण अगर किसी समाज में कोई नवजात शिशु जन्म लेता है तो वहाँ लोग माँ बाप को कोसना, ताना मारना शुरू कर देते हैं। और तब तक ताना मारते रहते हैं जब तक माँ बाप अपने उस कलेजे के टुकड़े

का ही नही अपितु हिजडों के जीवन के साथ परिवार और समाज के नाकरात्मक रवैया को भी रेखांकित किया है आखिर क्यों ऐसा दुर्व्यहार किया जाता है वो इन्सान नही हैं क्या? उनके अन्दर आत्मा नही है क्या? जो उनके साथ यह दर्दनाक व्यवहार किया जाता है– "समाज की मानसिकता बदलीन होगी लेकिन बदलेगी कैसे? कोई विकल्प है? किसी को तो पहल करनी ही होगी किसी अभिभावक को पुकार लगानी होगी वा सड़ी–गली मान्यताओं को फाडकर फेंक देना होगा। जला देना होगा। भस्म कर देना होगा।"

बिन्नी नें दिखा दिया है कि वह भी एक आम लोगों की तरह अपनी जिन्दगी जी सकता है। अपना खुद का व्यवसाय चला सकता है। उसे आरक्षण की भी जरूरत नही है। उसे लगता है कि आरक्षण देकर उस पर एक और लाचारी की परत चढ़ाई जा रही है जो उसे विल्कुल गवारा नही है।

सरकार हमें सुविधाएं दे सकती है नया कानून बना सकती है, लेकिन गन्दी मानसिकता को नही बदल सकती इसलिए चाहे हमारे समाज में दलित का विमर्श हो, स्त्री विमर्श हो और चाहे वो किन्नर विमर्श हो किसी पर भी विमर्श करने की जरूरत नहीं है, और अगर जरूरत है तो हमें अपने विचारों में बदलाव लाने की। विमर्श पुस्तकों में ही दबे रह जाते हैं और यातनाएं भेगी, यातनाएं भोगते रहते हैं। समाज को बदलने की मत सोचों स्वयं बदलो, समाज तो खुद ही बदल जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. मुदगल चित्रा –पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 'नाला सोपारा' पेज नं० 11
2. भगवंत– 'अनमोल जिन्दगी' 50–50 (राजकमल) प्रकाशन–पेज नं०–35
3. वही, पृष्ठ संख्या–42
4. मुदगल चित्रा –पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 'नाला सोपारा' पेज नं० 46
5. पारू मदन नायक–'मैं क्यों नहीं' पेज नं०–165
6. मुगदल चित्रा–पोस्ट –' पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 'नाला सोपारा' पेज नं० 46
7. वही, पृष्ठ संख्या 177

–संगीता / डॉ० सुनीता, आर०जी० (पी०जी०) कॉलेज
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ (उत्तर प्रदेश)

डॉ. सुमन, एसोसिएट प्रोफेसर, जो वर्तमान में (समाज शास्त्र विभाग) रघुनाथ गर्ल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में सन् 2001 से कार्यरत् हैं। इनका 1, जूलाई 1977 को गोरखपुर में जन्म हुआ। पण्डित दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सन् 1997 में स्नातक (इतिहास, समाजशास्त्र और शिक्षा शास्त्र) और सन् 1999 में समाजशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल किया और इसके साथ–साथ सन् 1999 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा" (NET) उत्तीर्ण किया। इन सभी उपाधियों के होने के बावजूद इन्होंने अपनी पढ़ाई की यात्रा जारी रखा और भारतीय मानवाधिकार संस्थान, नई दिल्ली से दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत सन् 2008 में मानवाधिकार विषय में पुनः स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल किया और सन् 2010 में पी. एचडी. की उपाधि चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से प्राप्त किया। इन्होंने अपना शिक्षण कार्य सन् 2000 में प्रवक्ता समाजशास्त्र विषय में राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, सरदारनगर, गोरखपुर से आरम्भ किया था जिसके थोड़े समय बाद ही सन् 2001 में इनका चयन समाजशास्त्र विषय में प्रवक्ता पद पर रघुनाथ गर्ल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ में हो गया।

डॉ. सुमन, का अध्ययन और अध्यापन में हमेशा से विशेष लगाव रहा है, इन्होंने अपने शोध कुशलता को प्रभावी और बहुआयामी बनाने हेतु भारतीय समाज विज्ञान शोध परिषद्, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित दो वृहद शोध परियोजना (MAJOR RESEARCH PROJECT) पर शोध कार्य किया और अब तक दो कंसल्टेंसी प्रोजेक्ट में भी सहयोगी सलाहकार के रूप में भी योगदान किया है। इनका शोधपत्र विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुका है, तथा अनेक पुस्तक और शोध पत्रिकाओं मे सम्पादक का कार्य किया है इनके शोध लेख विभिन्न किताबों में पाठ के रूप मे प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीयों में इन्होने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।

Published By :

ANU BOOKS

New Delhi • Meerut • Glasgow [UK]
E-mail : anubooks171@gmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-2657362, Mob. : 09997847837 [India]
+44 758 651 3593 [UK]

2019
ISBN : 978-93-87912-68-6

₹ 100/-

कृषकों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

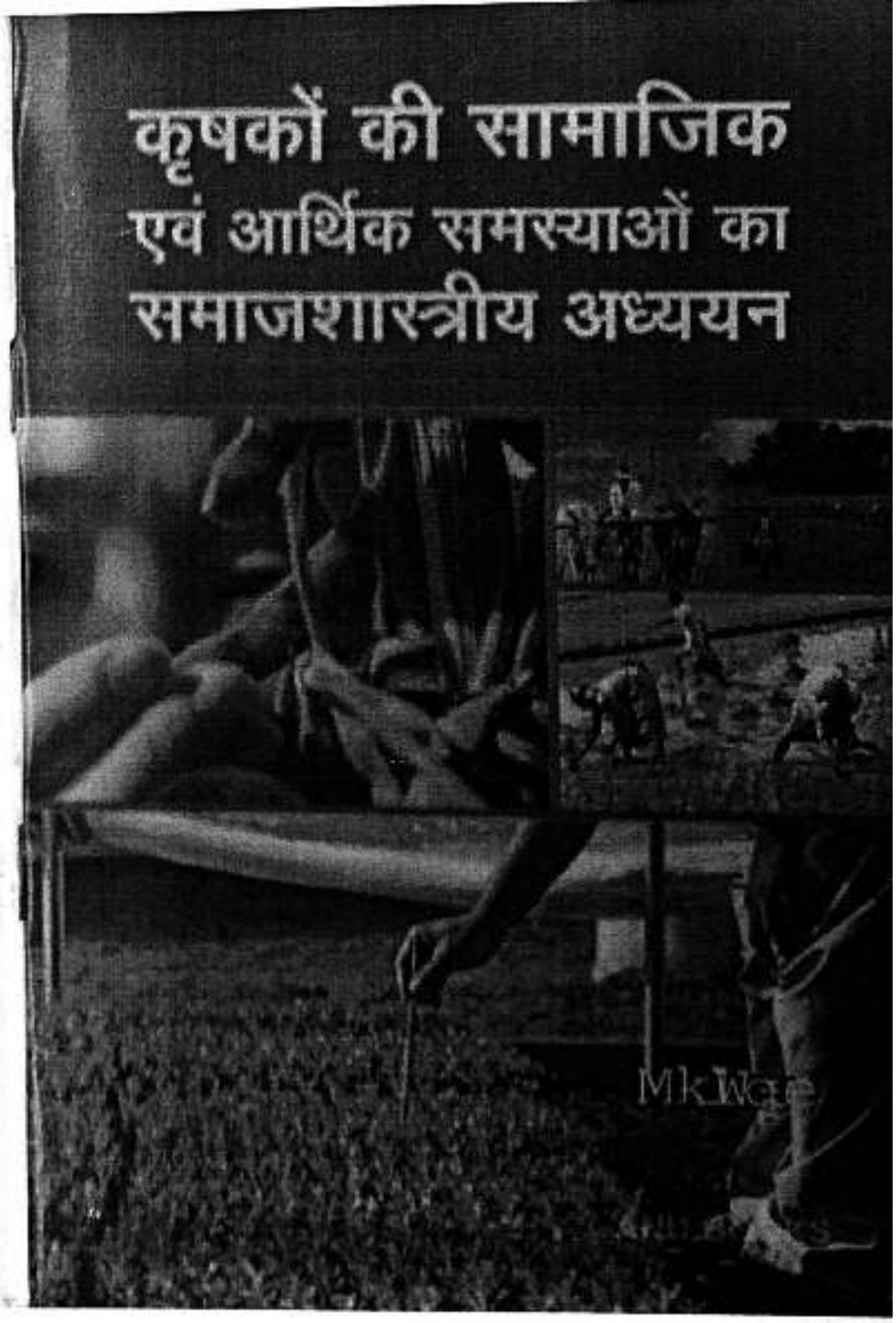

डॉ. सुमन, एसोसिएट प्रोफेसर, जो वर्तमान में (समाज शास्त्र विभाग) रघुनाथ गर्ल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में सन् 2001 से कार्यरत् हैं। इनका 1, जुलाई 1977 को गोरखपुर में जन्म हुआ। पण्डित दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सन् 1997 में स्नातक (इतिहास, समाजशास्त्र और शिक्षा शास्त्र) और सन् 1999 में समाजशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल किया और इसके साथ–साथ सन् 1999 मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा" (NET) उत्तीण किया। इन सभी उपाधियों के होने के बावजूद इन्होने अपनी पढाई की यात्रा जारी रखा और भारतीय मानवाधिकार संस्थान, नई दिल्ली से दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत सन् 2008 मे मानवाधिकार विषय मे पुन: स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल किया और सन् 2010 मे पी. एचडी. की उपाधि चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से प्राप्त किया। इन्होंने अपना शिक्षण कार्य सन् 2000 मे प्रवक्ता समाजशास्त्र विषय में राजकीय बालिका इन्टर कॉलेज, सरदारनगर, गोरखपुर से आरम्भ किया था जिसके थोड़े समय बाद ही सन् 2001 में इनका चयन समाजशास्त्र विषय मे प्रवक्ता पद पर रघुनाथ गर्ल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ में हो गया।

डॉ. सुमन, का अध्ययन और अध्यापन में हमेशा से विशेष लगाव रहा है, इन्होंने अपने शोध कुशलता को प्रभावी और बहुआयामी बनाने हेतु भारतीय समाज विज्ञान शोध परिषद्, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित दो वृहद शोध परियोजना (MAJOR RESEARCH PROJECT) पर शोध कार्य किया और अब तक दो कंसल्टेंसी प्रोजेक्ट मे भी सहयोगी सलाहकार के रूप मे भी योगदान किया है। इनका शोधपत्र विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं मे प्रकाशित हो चुका है, तथा अनेक पुस्तक और शोध पत्रिकाओं में सम्पादक का कार्य किया है इनके शोध लेख विभिन्न किताबों मे पाठ के रूप में प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीयो मे इन्होंने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।

Published By :

ANU BOOKS

New Delhi • Meerut • Glasgow (UK)
E-mail : anubooks123@gmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-2657362, Mob. : 99976 47837 (India)
+44 758 451 3581 (UK)

2019
ISBN : 978-93-87922-66-2

₹ 600/-

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत बाल-श्रमिकों का सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन

डॉ. सुमन

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत
बाल-श्रमिकों का
सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन

डॉ. सुमन

ANU BOOKS

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत 'बाल–श्रमिकों' का सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन

डॉ0 (श्रीमती) सुमन
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
आर०जी० (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

Published By :
ANU BOOKS
Delhi Meerut Glasgow (UK)
Visit us : www.anubooks.com

First Published

2019

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत 'बाल–श्रमिकों' का सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन

ISBN: 978-93-87922-66-2

Price : Rs.600/-

Copyright © authors

Printed by :

D.K. Fine Art Press Pvt. Ltd.,

New Delhi

Published by :

Anu Books

H.O. Shivaji Road, Meerut, 0121-2657362, 01214007472

Branch : H-48, Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837

Glasgow (UK)+447586513591

डॉ. सुमन, एसोसिएट प्रोफेसर, जो वर्तमान में (समाज शास्त्र विभाग) रघुनाथ गर्ल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में सन् 2001 से कार्यरत हैं। इनका 1, जूलाई 1977 को गोरखपुर में जन्म हुआ। पण्डित दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सन् 1997 में स्नातक (इतिहास, समाजशास्त्र और शिक्षा शास्त्र) और सन् 1999 में समाजशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल किया और इसके साथ–साथ सन् 1999 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा" (NET) उत्तीर्ण किया। इन सभी उपाधियों के होने के बावजूद इन्होंने अपनी पढ़ाई की यात्रा जारी रखा और भारतीय मानवाधिकार संस्थान, नई दिल्ली से दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत सन् 2008 में मानवाधिकार विषय में पुनः स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल किया और सन् 2010 में पी. एचडी. की उपाधि चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से प्राप्त किया। इन्होंने अपना शिक्षण कार्य सन् 2000 में प्रवक्ता समाजशास्त्र विषय में राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, सरदारनगर, गोरखपुर से आरम्भ किया था जिसके थोड़े समय बाद ही सन् 2001 में इनका चयन समाजशास्त्र विषय में प्रवक्ता पद पर रघुनाथ गर्ल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ में हो गया।

डॉ. सुमन, का अध्ययन और अध्यापन में हमेशा से विशेष लगाव रहा है, इन्होंने अपने शोध कुशलता को प्रभावी और बहुआयामी बनाने हेतु भारतीय समाज विज्ञान शोध परिषद, नई दिल्ली द्वारा वितपोषित दो वृहद शोध परियोजना (MAJOR RESEARCH PROJECT) पर शोध कार्य किया और अब तक दो कंसल्टेंसी प्रोजेक्ट में भी सहयोगी सलाहकार के रूप में भी योगदान किया है। इनका शोधपत्र विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुका है, तथा अनेक पुस्तक और शोध पत्रिकाओं में संम्पादक का कार्य किया है इनके शोध लेख विभिन्न किताबों में पाठ के रूप में प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीयों में इन्होने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।

Published By :

ANU BOOKS

New Delhi • Meerut • Glasgow (UK)
E-mail : anubooks123@gmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-2657362, Mob. : 99578 47837 (India)
+44 758 653 3591 (UK)

2019
ISBN : 978-93-87922-67-9

₹ 800/-

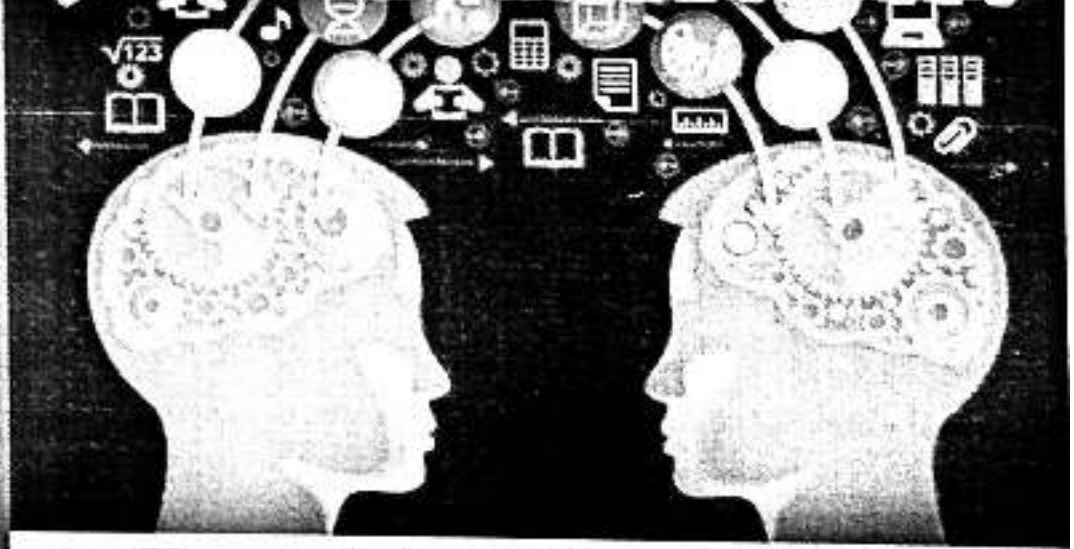

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की नवीन परीक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. सुमन

ANU BOOKS

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की नवीन परीक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय अध्ययन

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की नवीन परीक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० (श्रीमती) सुमन
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
आर०जी० (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

Published By :
ANU BOOKS
Delhi Meerut Glasgow (UK)
Visit us: www.anubooks.com

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की नवीन परीक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय अध्ययन

First Published 2019

ISBN: 978-93-87922-67-9

Price : Rs.800/-

Copyright © authors

Printed by :

D.K. Fine Art Press Pvt. Ltd., New Delhi.

पूजनीय एवं

प्रेरणा के स्रोत

मेरे सास–स्वसुर और

माता–पिता के सम्मान

Dr. Sanjay Kumar (born 1975) is an Associate Professor in the Department of Defence Studies, Meerut College, Meerut. He has completed 9 minor and major research projects funded by UGC & ICSSR, New Delhi. At present, he is associated with ICSSR major research project. He has authored and edited Forty research and text books and has published 122 research papers in various reputed journals. Besides, he was a Professorial Fellow/Visiting Fellow of the India Studies Center, Thammasat University, Bangkok, Thailand, Under Scholar Cultural Exchange Programme of ICSSR-NRCT (December 2010 and June 2012). He is Visiting Professor, Novana University, Nigeria. He is Visiting Fellow, United Service Institution of India, New Delhi. He has so far successfully conducted 20 National, 02 International Seminar, 01 Faculty Recharge Programme and 02 Workshop sponsored by UGC, ICSSR, ICWA & USI. He is member of various academic bodies such as National Congress for Defence Studies, Allahabad, USI, IDSA, New Delhi. He is the chief editor of two refereed research journal *Suraksha Chinton* and *International Journal of Social Science*. He is actively engaged in conducting research and guiding Doctoral and Post Doctoral research scholars. About 34 students has so far been awarded Doctoral & Post Doctoral degree Under His supervision.

Dr. Bina Rai is an Associate Professor in the Department of Political Science, Raghunath Girls' P.G. College, Meerut. She got her D.Phil. in Political Science from University of Allahabad, Allahabad. She is Academic Counselor of IGNOU since 2013. She has authored one Book and one Edited book. 35 Research Papers/articles published in National and International Journals, and 17 Chapters in Edited Books. Under her supervision 5 students enrolled in Ph.D. She is the member of various academic bodies such as IPSA, UPPSA, and Gandhian Studies.

Dr. Neelam Kumari is an Associate Professor in the Department of Chemistry, Meerut College, Meerut. She has obtained her Ph. D. Degree from the C.C.S. University, Meerut. She has so far successfully conducted 7 National Seminar as Convener & Co-convener, Organizing Secretary & Coordinator. She is life member of Indian Science Congress and member of various reputed research institutions. Her Research expertise includes Bio-chemistry. She has contributed chapters in various edited & seminar Proceedings. She has Published 22 Research papers in various refereed U.G.C. Recognized. She has participated and presented papers in National & International Seminars. She also authored/edited 10 Books on Nuclear Chemistry, Bio-inorganic, Recent Development in Science and Technology, Bio-inorganic, Environmental Chemistry, Environmental Security and India China Strategic Relation. At present she is associated with ICSSR, minor project.

Published By :

ANU BOOKS

New Delhi • Meerut • Glasgow (UK)
E-mail : anubooks123@gmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-2657362, Mob. : 99978 47837 (India)
+44 758 651 3591 (UK)

2019

ISBN : 978-93-87922-71-6

₹ 600/-

STRATEGIC IMPLICATION OF NORTH EAST AND INDIA'S LOOK EAST POLICY

Dr Sanjay Kumar
Dr Bina Rai
Dr. Neelam Kumari

STRATEGIC IMPLICATION OF NORTH EAST AND INDIA'S LOOK EAST POLICY

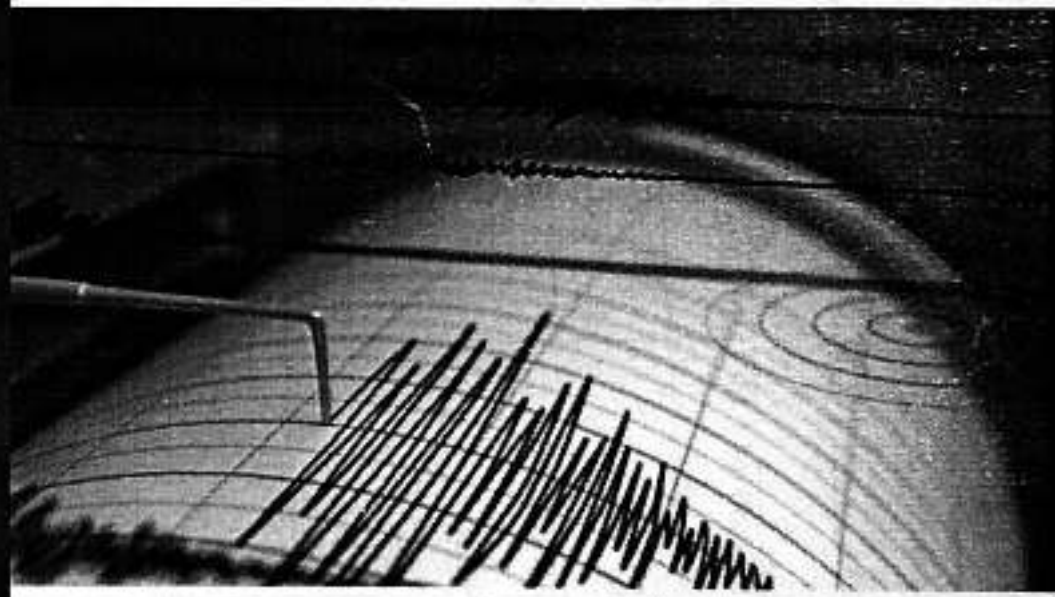

Dr Sanjay Kumar
Dr Bina Rai
Dr. Neelam Kumari

ANU BOOKS

STRATEGIC IMPLICATION OF NORTH EAST AND INDIA'S LOOK EAST POLICY

Dr. Sanjay Kumar
Asso. Prof., Department of Defence Studies
Meerut College, Meerut
Dr. Bina Rai
Asso. Prof., Department of Political Science
RGPG College, Meerut
Dr. Neelam Kumari
Asso. Prof., Department of Chemistry
Meerut College, Meerut

Anu Books
Delhi Meerut Glasgow (U.K.)

STRATEGIC IMPLICATION OF NORTH EAST AND INDIA'S LOOK EAST POLICY

First Published
2019

ISBN :
978-93-87922-71-6

Price : ₹ 600/-

Copyright © author

Printed by :
D.K. Fine Art Printers Pvt. Ltd.,
New Delhi

Published by :
ANU BOOKS
H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, +91 8800688996
Branch : H-48, Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837
Glasgow (UK)+447586513591

डॉ संजय कुमार मेरठ कॉलेज, मेरठ के रक्षा अध्ययन विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। आप ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रक्षा एवं स्ट्रैटेजिक अध्ययन विषय में स्नातकोत्तर की शिक्षा 1998 में प्राप्त की। आप ने 2006 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से—भारत—अमेरिका संबंध विषय पर पी. एच—डी. की उपाधि प्राप्त की। आप की 52 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।आप के उच्च कोटि के 100 से अधिक शोध पत्र विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है।आप यू. जी. सी. / आई. सी.एस. एस. आर., नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित 10 लघु एवं वृहद शोध परियोजनाओं पर कार्य कर चुके है। आप सफलतापूर्वक 04 अंतरराष्ट्रीय एवं 18 राष्ट्रीय सगोष्ठियों का आयोजन कर चुके है।आप 01 रिफ्रेशर कोर्स, 02 फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम,03 वर्कशॉप का आयोजन कर चुके है।आप को आई. सी. एस. एस. आर. नई दिल्ली एवं नेशनल रिसर्च काउन्सिल ऑफ थाईलैंड, कल्चरल एक्सचेंज प्रोग्राम (2010 एवं 2012) के तहत "विजिटिंग फेलो" की उपाधि प्रदान की गई। आप को नोवाना विश्वविद्यालय, नाइजीरिया द्वारा दिसम्बर 2015 में "विजिटिंग प्रोफेसर" नियुक्त किया गया।2015 में ही युनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया (यू. एस. आई), नई दिल्ली द्वारा "विजिटिंग फेलो" बनाया गया। आप एडवांस रिसर्च इन्स्टीट्यूट फॉर डेवलपमेंट ऑफ सोशल साइंस के महासचिव है। आप आई. डी. एस. ए., यू. एस. आई., नई दिल्ली के एसोसिएट मेम्बर है। आप एन. सी. सी. एस. के आजीवन सदस्य है।आप के निर्देशन में 28 छात्रों को शोध की उपाधि प्राप्त हो चुकी है। आप के निर्देशन में 10 छात्रों ने पी. डी. एफ. का शोध कार्य पूर्ण किया है। आप दो राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं "सुरक्षा चिन्तन" एवं "अंतरराष्ट्रीय जर्नल ऑफ सोशल साइंस" के मुख्य संपादक है।

डॉ. बीना राय आर जी पी जी कॉलेज मेरठ के राजनीति विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर एवं 2018 से विभागाध्यक्ष है। आप 2003 से कार्यरत है। इन्होंने स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध उपाधि इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूर्ण की 2003—07 तक ये राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी के रूप में महाविद्यालय में कार्यरत थी। लगभग 50 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत कर चुकी है। लगभग 40 शोधपत्र विभिन्न अन्तरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके है। इनके कुछ शोधपत्रों को सर्वोत्तम शोधपत्र के रूप में सम्मानित किया गया है। इन्होंने 3 पुस्तकें भी लिखी हैं। 18 सम्पादित पुस्तकों में इनके अध्याय प्रकाशित है। आप नियमित रूप से समाचार पत्र में भी लिखती रहती है अब तक इनके 12 सम्पादकीय लेख प्रकाशित हो चुके है। आपने 2 शोध परियोजनाओं में परामर्श निदेशक भी रही है आप 5 सेमिनार में सह समन्वयक भी रही है। आप 2012 से इग्नू की शैक्षणिक सलाहकार हैं। इनके निर्देशन में 8 शोध छात्राएं शोध में नामांकित है। प्रतिवर्ष स्नातकोत्तर स्तर पर लघु शोध प्रबंध में भी आप निर्देशक है।

आप बहुत सारी शैक्षिक संस्थाओं / संघ जैसे गांधियन स्टडीज, उत्तर प्रदेश राजनीति विज्ञान संघ, भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद की जीवन पर्यंत सदस्य है। आपको अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद तथा इन्द्रे से उत्कृष्ट शिक्षक का सम्मान भी प्राप्त हुआ है। आप निर्मल उड़ान नामक एक संस्था के माध्यम से बिहार राज्य के सिवान जिले के विद्यालयों में प्रतिवर्ष विद्यार्थियों के लिए शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों / वस्तुओं को आयोजित करती रहती है। आप विभिन्न राज्यों के लोक सेवा आयोगों में विषय विशेषज्ञ भी है। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग में भी विषय विशेषज्ञ है। आप एडवांस रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर डेवलपमेंट ऑफ सोशल साइंस की उप निदेशक है।राष्ट्रीय शोध पत्रिका "सुरक्षा चिन्तन" की उप मुख्य संपादक है।

Published By :

ANU BOOKS

New Delhi • Meerut • Glasgow (UK)
E-mail : anubooks123@gmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-4007472, Mob. : 99978 47837 (India)
+44 758 651 3591 (UK)

ISBN : 978-93-87922-88-4

2020 ₹ 500 /-

नक्सलवाद एवं आन्तरिक सुरक्षा विशेष सन्दर्भ: छत्तीसगढ़

लेखक: डॉ. संजय कुमार
डॉ. बीना राय

नक्सलवाद एवं आन्तरिक सुरक्षा

विशेष सन्दर्भ: छत्तीसगढ़

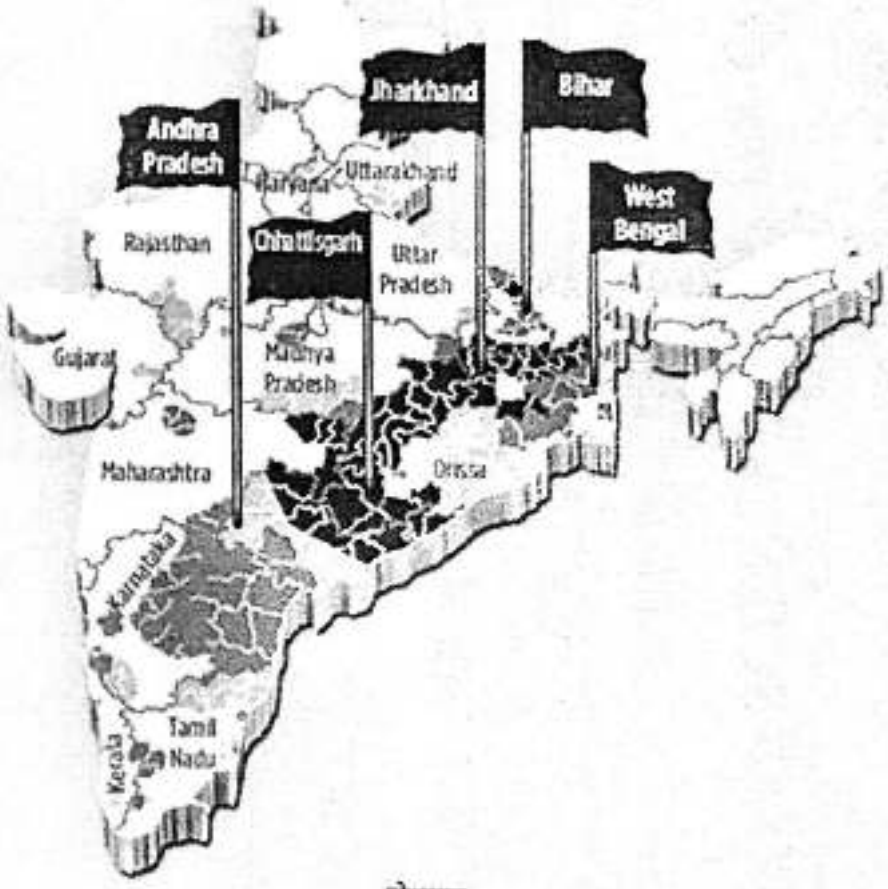

लेखक :
डॉ. संजय कुमार
डॉ. बीना राय

ANU BOOKS

नक्सलवाद एवं आन्तरिक सुरक्षा
विशेष सन्दर्भः छत्तीसगढ़

लेखक:
डॉ० संजय कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा अध्ययन विभान, मेरठ कॉलेज, मेरठ

डॉ० बीना राय
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
आर०जी०पी०जी० कॉलेज, मेरठ

अनु बुक्स
दिल्ली, मेरठ ग्लॉसगो (यू.के.)
www.anubooks.com

नक्सलवाद एवं आन्तरिक सुरक्षा विशेष सन्दर्भः छत्तीसगढ़

First Published: **2020**

ISBN: **978-93-87922-88-4**

Price : **500/-**

Copyright © **authors**

Printed by :
Anvi Composer, New Delhi

Published by :
Anu Books
H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, 8800688996
Branch : Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837
Glasgow (UK)+447586513591

NEW TRENDS IN FINE ARTS

(Applied Art / Painting / Sculpture)

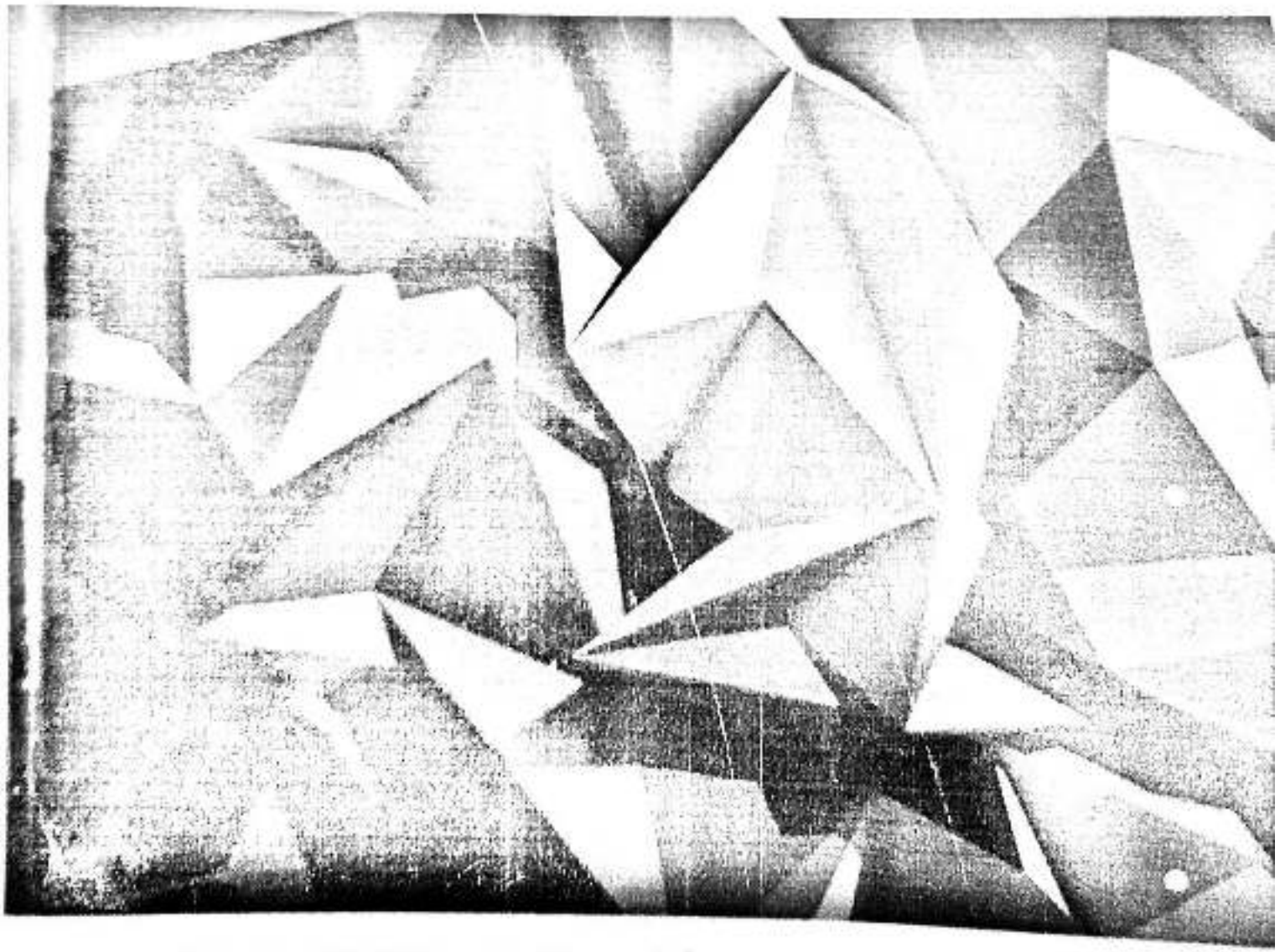

Dr. Pooja Gupta

Copyright ©

All rights reserved to Swami Vivekanand Subharti University, Meerut. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means without permission. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Disclaimer : The views expressed in the articles are those of the Authors/contributors and not necessarily of the editors and publisher. Authors/ Contributors are themselves responsible for any kind of Plagiarism found in their articles and any related issues.

First Published, 2019

Amount: Rs. 500/-

ISBN : 978-81-941759-1-9

Printed in India :

Mahayana Theravada Vajraya Religious & Charitable Trust

Subhartipuram NH- 58 Meerut 250001(UP) India

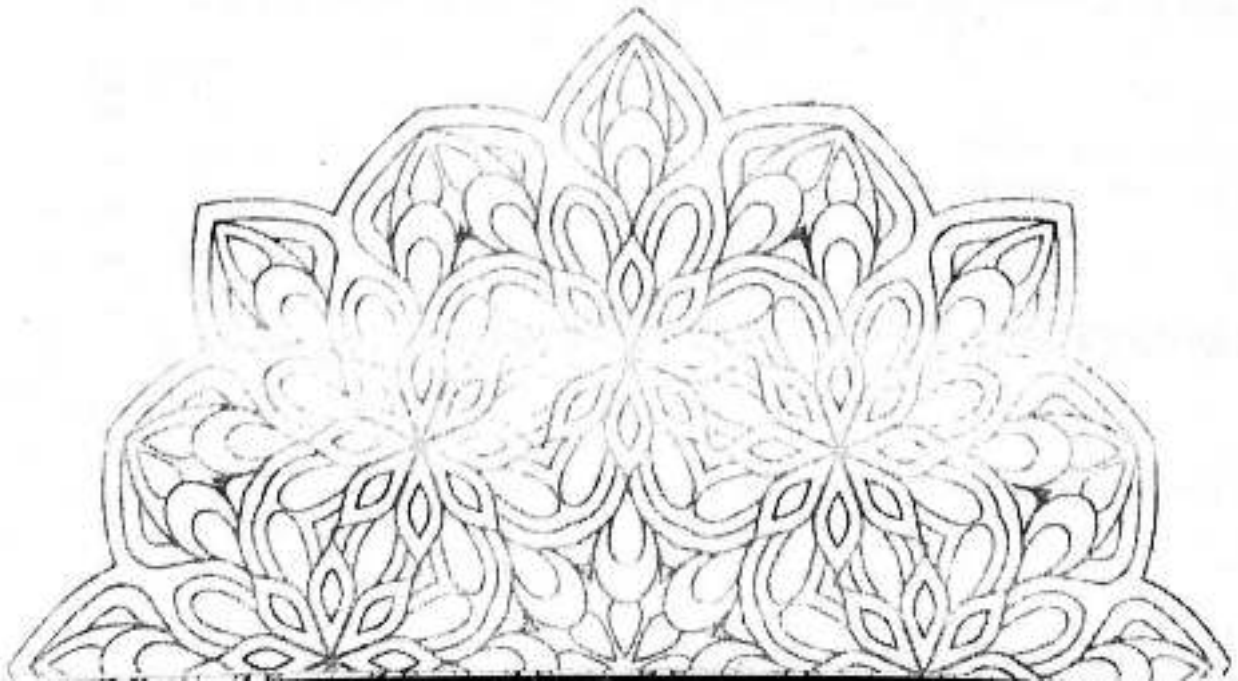

विषयानुक्रमणिका

दृश्यकला में प्रयोगधर्मिता का दौर–डॉ० अर्चना शर्मा	1 - 3
समकालीन कला का बदलता हुआ बाजार एवं उसका भविष्य – डॉ० वंदना शर्मा	4 - 5
Performance Art: Different concept in visual art-Prof. (Dr.) Pooja Gupta.	6 - 8
समकालीन चित्रकला में आधुनिक प्रयोग फोटोग्राफी एवं कम्प्यूटर ग्राफिक द्वारा कलाकारों का भविष्य – डॉ० सरिता शर्मा	9 - 10
आधुनिक काल में कला का नया रूप–श्रीमती आँचल सिंह	11 - 12
व्यवसायों के नवीनतम माध्यम में लोक कला धरोहर के विभिन्न रूप–डॉ० अमिता शुक्ला	13 - 17
कला मनीषी किशन चन्द आर्यन के ललित कला में बहुमुखी आयाम–डॉ० अनन्या शाँडिल्य	18 - 21
आधुनिक भारतीय कला में ज्यामितीय रेखाओं का योगदान : एक संकलन – डॉ० नाजिमा इरफान	22 - 24
समकालीन प्रयोगधर्मिता में कला साधक व कला भविष्य – डॉ० शकुन सिंह	25 - 26
नवीन आयामों के साथ भारतीय चित्रकला का नवीनीकरण – अभिलाषा शुक्ला	27 - 28
बंगाल की लोककला – डॉ० दिशा दिनेश	29 - 32
कला कलाकार का प्रतिबिम्ब–डॉ० सोनल भारद्वाज	33 - 34
मथुरा और गंधार की मूर्तिकला – श्रीमति विनीता गुप्ता	35 - 37
नवीन प्रवृत्तियों से प्रभावित विज्ञापन कला –डॉ० बबीता शर्मा	38 - 40
लोक कला की नवीन प्रवृत्तियाँ: यामिनी राय के चित्रों का प्रभाव – डॉ० रजनिका	41 - 43
समकालीन कलाकार लक्ष्मण प्रसाद के कलाकार्यों का वर्णन–पवनेन्द कुमार तिवारी	44 - 45
रामकिंकर बैज, मीरा मुखर्जी, राम वी० सुतार, मृणालिनि मुखर्जी की मूर्तिकला साधना का संक्षिप्त विश्लेषण–शबाहत	46 - 49
भारतीय कला में लिथोग्राफी: राजा रवि वर्मा–श्रीमति आकांक्षा गुप्ता	50 - 51
भारत में विविध कला प्रयोग पर एक चर्चा–मीनाक्षी	52 - 54
आधुनिक युग में प्रयोगधर्मिता के नवीन कदम–पिंकी वर्मा	55 - 58
कम्प्यूटर कला: एक नवीन परिदृश्य–शिवानी राठी	59 - 59
समकालीन कलाकार तैयब मेहता रेखाओं व रंगों के जादूगर–रूबी चौधरी	60 - 62
आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला में तकनीकी के बढ़ते प्रयोग–रजनी बंसल	63 - 66
Digital Art: New form of technology and art-Ms. Vidhi Khandelwal	67 - 68
New trends in arts and design-Dr. Nishma Singh	69 - 71
Impact of social media on advertising in India-Dr. Anshu Srivastava	72 - 74
Current scenario of creativity in advertising-Dr. Gunjan Sharma	75 - 77
Contemporary Art and its future-Mr. Anil Kumar	78 - 78
Role play by advertising in new art & media-Ms. Kanchan Gupta	79 - 81
Installation Art-Mr. Kishan Kumar Yadav	82 - 82
New trends in advertising-In film advertising-Mr. Ayon Sarkar	83 - 85
Contemporary Art and its future-Mr. Punit Kumar	86 - 88
Defining Art and its future-Ms. Ayushi	89 - 90
समकालीन कला एवं कला बाजार–ओमप्रकाश मिश्रा	91 - 92
डॉ० जगमोहन माथोडिया का रचना संसार- कृष्ण कुमार	93 - 95
आधुनिक भारतीय कलाकारों एम० एफ० हुसैन, रामकुमार, के० स्वामीनाथन, ए० रामचन्द्रन एवं मंजीत बावा की कला में अभिव्यंजनात्मकता- दिलीप कुमार पटेल	96 - 101

दृश्यकला में प्रयोगधर्मिता का दौर

डॉ० अर्चना रानी

विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर :
ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग,
रघुनाथ गर्ल्स (पीजी) कॉलिज, मेरठ

संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोगधर्मिता सृजन की सहचरी रही है। 'प्रयोग' अलग से कोई धारणा नहीं है, वरन् सृजन का ही एक उपादान है। हाँ, यह सही है कि सृजन तभी होता है जब हम बाह्य बन्धनों से मुक्त हों। प्रसिद्ध समीक्षक बर्गसाँ का भी कथन था कि बाह्य बन्धनों से मुक्ति होने पर ही हम कार्य करते हैं, तभी सृजन संभव है। वस्तुतः सृजन स्वयं में एक प्रयोग है। इतिहास से पूर्व के काल में जब मानव के पास कोई भाषा–लिपि नहीं थी, तब उसने अपनी बात चित्रों, रेखांकनों के माध्यम से कही। चित्रों ने मानव की प्रवृत्ति को मुखरता प्रदान की, भाषा का उदय हुआ। पाषाण युग में हतौड़ा, छैनी का अविष्कार हुआ जो तत्कालीन मानव की कल्पना से निर्मित हुआ। अपने जीवन–यापन को सरल, सुगम बनाने हेतु उसने पहिये का अविष्कार किया, जिसने मानव के जीवन में गति प्रदान की। मानव की कल्पना शक्ति से जिस पहिये का अविष्कार हुआ उसने वैज्ञानिकों, इंजीनियरों को दिशा प्रदान की। आज हम रेल, कार, मैट्रो, रेपिड ट्रेन से लेकर वायुयान तक अपने भौतिक जीवन में सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जिस पहिये ने एक गति प्रदान की, वह निरन्तर विकासोन्मुख है। आज हमने बहुत 'स्पीड' पकड़ ली है।

मानव का निर्माण (जन्म) मिट्टी में होता है तथा निर्वाण (मृत्यु) भी यहीं हो जाता है। इस निर्माण एवं निर्वाण के मध्य के समय में मानव निरन्तर अपने–अपने कार्य क्षेत्र में सृजनशील रहता है। जब एक बच्चा जन्म लेता है तो उसके लिये यह दुनिया अजनबी होती है। धीरे–धीरे वह वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता है, अपने पारिवारिक परिवेश से जुडता है तथा एक लय, एक तान में आ जाता है। यही स्थिति कला साधना की होती है। हमारा परिवेश असीम विविधताओं में होता है– यहाँ फूल भी है, धूल भी है। हास्य भी है, दुःख भी है। काँटे भी हैं, हरी कोमल दूब भी है, संयोग के साथ–साथ वियोग भी है– यही सब कलाकार की प्रेरणा–स्त्रोत बनते हैं।
अगर हम पारम्परिक अर्थात् प्राचीन कला पर दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि पहले कला बन्धनों से युक्त थी । कहीं राजाश्रयों, सामान्तों का बन्धन था तो कहीं धर्म, परम्परा तथा शास्त्रों का। और यह स्थिति सभी दृष्य कलाओं पर लागू थी। अगर हम भारतीय सिनेमा पर दृष्टि डालें तो देखते हैं कि सत्यजीत रे एवं दादा फाल्के के समय में फिल्मों में कितनी भारतीयता, आदर्श, लज्जा थी। उस समय की नायिकायें पूरी बाँहें के बन्द गले के वस्त्र पहनती थीं तथा शूटिंग भी बहुतया स्टूडियों में बने सैट्स में होती थीं। लेकिन समयानुसार वस्त्रों की बाँहें सिकुड़ती चली गयी, गले–बढ़ते चले गये। शूटिंग भी डेस्टीनेशन प्लेसेस या विदेशों में होने लगी हैं। शास्त्रीय संगीत का स्थान फ्यूजन, मेकअप ने ले लिया है। अगर हम अपनी दिनचर्या पर ही दृष्टि डालें तो पाते हैं कि कैसे हम भारतीय परिधानों से दूर होकर 'इण्डो वेस्टर्न' ड्रैसेज के ओर आ गये हैं। तो दृश्य कला सृजन में कुछ नयापन क्यों नहीं?वस्तुतः हमारे सामाजिक सरोकारों का प्रभाव हमारे कला–सृजन पर पड़ना लाज़मी ही है।

कला में प्रयोगों का प्राधान्य तो प्रारम्भ से ही रहा है, पर उसमें आकस्मिक परिवर्तन उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दिखाई देता है। यह दौर अनेक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। मशीनी उद्योगों के अस्तित्व में आने के बाद पूरी दुनिया की सामजिक संरचनायें अस्त–व्यस्त हो गयीं। ऐसे में कला साहित्य ने अपनी रचनाओं के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धीरे–धीरे कला बहुआयामी होती गई और प्रयोगधर्मिता के नवीन आयाम उद्घाटित होते चले गये।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत में पश्चिमी कला की तर्ज पर कलाकृतियाँ बनने लगीं, जिनकी भारत में केवल धनाढ्य वर्ग तक ही माँग थी। हाँ, विदेशी ग्राहक कलाकार को मिल जाते थे। सन् 1940 के आसपास भारत में कई कला–समूह प्रकाश में आये, जिनमें कोलकाता प्रोगेसिव ग्रुप, शिल्पी चक्र दिल्ली, प्रोगेसिव

आधुनिक भारतीय कला में ज्यामितीय रेखाओं का योगदान : एक संकलन

डॉ० नाजिमा इरफान

असि० प्रोफेसर, चित्रकला विभाग
आर०जी० पी०जी० कॉलिज, मेरठ

यह प्रमाणित है कि भारतीय चित्रकला के इतिहास में प्राचीन काल से ही कलाकारों ने अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के लिये तथा अपने भावों को दूसरों तक पहुँचाने के लिये और अपने मन की सन्तुष्टि के लिये अनेक माध्यमों का प्रयोग किया है। यह प्रक्रिया अनवरत् रूप से चली आ रही है। कला का विकास सामान्यता प्रयोगधर्मिता पर विशेष रूप से केन्द्रित रहा है। चित्रों में प्रयुक्त आकारों के अन्तर्गम यद्यपि मानवाकृति, पशु पक्षी, प्राकृतिक दृश्य, पेड़ पौधे सर्वाधिक लोकप्रिय रूप रहे हैं, फिर भी इनके परे जाकर कलाकारों ने रचना के लिये नये–नये रूप खोजें, वे हैं ज्यामितीय रूप। परम्परागत माध्यमों के विरूद्ध आधुनिक समय में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं का प्रयोग चित्रों में चित्रण हेतु होने लगा। अब चित्र डिजिटल युग में आ गये हैं। चित्रों की रचना में कलाकारों के हाथ की जगह मशीनों व कम्प्यूटर ने ले लिया है। कला शिलाओं की भित्तियों से निकलकर कम्प्यूटर स्क्रीन तक पहुँच गई। आदि मानव के पास शिला, खनिज रंग, जानवरों की चर्बी और खून तथा उन्मुक्त विचार थे, ये उनकी रचना के माध्यम एवं संसाधन थे। उनके हाथ रेखा खींचने में इतने सिद्धहस्त थे कि उन्हें किसी यान्त्रिक उपकरण की आवश्यकता नहीं पड़ी। कला शिला एवं भित्तियों की खुरदुरी सतह से निकलकर चिकनी सतह पर आ गई। भवनों, गिरजाघरों एवं मन्दिरों की सपाट दीवारों पर चित्रकारी होने लगी। खून व चर्बी के स्थान पर खनिज तत्वों का प्रयोग किया जाने लगा। इस समय वानस्पतिक रंगों का बहुलता से प्रयोग किया गया। दीवारों के पश्चात् चित्र कपड़े, ताड़ पत्र तथा कागज पर आ गये। भारत का कला इतिहास इस तथ्य का साक्षी है जब लघु–चित्रों की रचनाएँ कागज पर की जाने लगीं। कागज के पश्चात् कैनवास, कैनवास के पश्चात् अनेक तरह की सतहें जैसे प्लाईबोर्ड, मैनीसाइट बोर्ड, जूट, सिल्क आदि सभी का प्रयोग किया जाने लगा। चित्रों की भौतिकता बदल गयी परन्तु चित्रों के आकार वही रहे। नवीनता की खोज में कहीं–कहीं कलाकारों ने मानवाकृतियों को त्यागकर केवल ज्यामितीय रेखाओं को ही अपनी चित्र रचनाओं का माध्यम बनाया। क्योंकि कलाकार चित्र को एक नया आयाम व सरलतम् रूप देना चाहता है। डॉ० राम निरंजन के शब्दों में "कलाकार के हस्त संचालन का उसकी सृजन प्रतिभा से निकलने वाली अनेकों आज्ञाओं के अनुक्रम के परिणाम के रूप में देखना तकनीक अथवा कौशल जैसे शब्दों के अति सरलीकरण के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।"1

इस प्रकार के विचारों को आज का कलाकार तोड़–मरोड़ चुका है। आज उसकी आकृतियाँ आन्तरिक बिम्बों को निकालने में बहुत बड़ी एवं सहायक भूमिका निभाते हैं। ज्यामितिय आकारों का यदि अन्वेषण न किया जाता तो शायद कला में नये–नये प्रयोगों को प्रोत्साहन भी न मिलता और कला का विकास भी नहीं होता। माध्यम एवं रूप वस्तुतः कलाकारों को प्रयोगधर्मिता की ओर उन्मुख करते हैं। यह कहीं न कहीं कलाकार के भीतर सोये हुए बिम्बों को उत्तेजित करता है। यह सत्य है कि कलात्मक प्रयोग दर्शकों को प्रभावित करते हैं। प्रेक्षक दीर्घ समय तक चित्र के बिम्बों को स्मरण रखता है इसका एक कारण यह भी है कि कलाकार की सृजनात्मक निष्ठा तथा कार्यकुशलता से चित्र में न्यूनता आती है तथा प्रेक्षक न्यूनता को स्वीकार करे अथवा नहीं परन्तु उसका स्मरण अवश्य रखता है। कलाकृति में आकृतियों के समय कलाकार की आन्तरिक सृजनात्मकता के अतिरिक्त विभिन्न प्रयोगों पर उसकी दक्षता को भी ध्यान में रखा जाता है। जब कलाकार का आन्तरिक सत्य तथा आकृति रूपी बाह्य उपादान एकनिष्ठ हो जाते हैं तभी सच्ची कलाकृति का आविर्भाव होता है। प्रेक्षक तभी चित्र के सौन्दर्य एवं संप्रेक्षण को ग्रहण करता है जब उसे चित्र में सभी तत्वों की एकता दिखती है।

डॉ० अर्चना रानी
79/343-347

Youth in India
Education and Employment

Edited by :
Dr. Jeet Singh & Dr. Vishal Dubey

Sponsored by

Department of Higher Education
Government of U.P.

Mahamaya Rajkiya Mahavidalaya, Sherkot (Bijnor), U.P.

Disclaimer

All rights reserved. This publication namely **"Youth in India : Education and Employment"** shall be exclusive property of Mahamaya Rajkiya Mahavidalaya, Sherkot, Bijnor (U.P.) and K.G. Publications, Modinagar. No part of this publication can be reproduced, stored in a data retrieval system or device, or transmitted in any means, electronic, mechanical, print, publishing, photocopying, recording or otherwise without permission of Mahamaya Rajkiya Mahavidalaya, Sherkot, Bijnor and K.G. Publications, Modinagar. Any unauthorized act in relation to all or any part of the material in this publication may call for appropriate legal action and proceedings.

It is a compilation of the articles submitted at the Department of Higher Education, sponsored National Seminar on "Youth in India : Education and Employment", held on 14-15, December, 2019 held at Mahamaya Rajkiya Mahavidalaya, Sherkot, Bijnor (UP) and edited by Dr. Jeet Singh and Dr. Vishal Dubey. Publishers are not responsible for the authenticity of the matter in the articles. The views and thoughts expressed in the papers and articles of the proceeding solely belong to the authors and not necessarily to the institution. Editors or any member of the organizing committee, in no way represent any official stand on any policy matter.

Although utmost care has been taken in publishing the papers and articles error-less, however editors and publisher bear no responsibilities for the errors or omissions inadvertently crept in the manuscript.

Seminar

Youth in India : Education and Employment

Sponsored by

Department of Higher Education, Government of Uttar Pradesh

Price : ₹ 600.00

Copyright : Editors (Dr. Jeet Singh, Dr. Vishal Dubey)

ISBN : 978-81-939741-3-1

Edition : December 2019

K. G. Publications

27, Sona Enclave, Modiangar (U. P.)

Ph. 9837686888

68.	**ROLE OF TEACHERS IN POVERTY AND EDUCATION** *Hegade Navnath Dharmaji* *Assistant Professor, New English School and Junior College Science, Bhalawani, Pandharpur*	307 – 309
69.	**EDUCATION 4.0.: CHANGING SCENARIO OF EDUCATION SYSTEM** *Dr. Parul Verma* *Amity Institute of Information Technology, Amity University Uttar Pradesh, Lucknow*	310 – 312
70.	**PRADHAN MANTRI KAUSHAL VIKAS YOJANA (PMKVY)** *Ravish Kumar Uppadhayay* *Research Scholar, Department of Physics, D. N. College, Meerut,*	313 – 318
71.	**THE PRELUDE OF SKILL DEVELOPMENT FOR WOMEN ENTREPRENEURS** *Sangharsha Baliram Sawale* *Research Scholar, Department of Economics, Humanities and Social Science Building,* *Dr. Babasaheb Ambedkar Mrathwada University, Aurangabad. (MS) 431004*	319 – 320
72.	**ANALYSIS OF HUMAN RESOURCE DEMAND AND SUPPLY IN UTTARAKHAND** *Sakshi Kharbanda* *Research Scholar, Radhey Hari Government PG Collego, Kashipur* *Dr. Sanjeev Mehrotra* *Associate Professor, Government College, Vigyasen*	321 – 324
73.	**YOUTH EMPOWERMENT AND POSITIVE DEVELOPMENT** *Dr. Ram Tiwari* *Assistant Prof., Dept of Defence and Strategic Studies, V.S.S.D. College, Kanpur.*	325 – 326
74.	**OPPORTUNITY OF INDIAN YOUTH IN ANDROID APP MARKET** *Kamal Kumar,* *DAV College, Kanpur*	327 – 329
75.	**RURAL ENTREPRENEURSHIP "INNOVATION, CHALLENGES AND OPPORTUNITIES"** *Dr. Reena Rastogi* *Asst. Professor (Botany), R.B.A. Govt. Degree College, Gajraula, Amroha.*	330 – 333
76.	**YOUTH UNEMPLOYMENT : PSYCHO-SOCIAL CONSEQUENCES** *Mamta Ambujanani* *Assistant Professor of Psychology, V.R.A.L. Govt. Mahila Degree College, Bareilly*	334 – 335
77.	**ENTREPRENEURSHIP IN HEALTH AND LIFE SCIENCES** *Neetu Singh* *Assistant Professor – Zoology, Ramabai Ambedkar Govt. Degree College, Gajraula, (Amroha)*	336 – 338
78.	भारत में युवा की स्थिति शिक्षा एवं रोजगार के विशेष संदर्भ में *डा0 विशाल दुबे* *असिस्टेंट प्रोफेसर, सैन्य विज्ञान, महामाया राजकीय महाविद्यालय, शेरकोट (बिजनौर)*	339 – 342
79.	दृश्य कलायें : शिक्षा, सृजन एवं व्यवसायीकरण *डॉ0 अर्चना रानी,* *विभागाध्यक्ष एवं ऐसो0 प्रोफे0 : ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पीजी) कॉलिज, मेरठ*	343 – 347
80.	"भारत में गरीबी और शिक्षा" *सुशील कुमार* *शोधार्थी, पी.एच.डी. (शिक्षा), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (मध्यप्रदेश)*	348 – 349
81.	मनरेगा से सशक्त होती ग्रामीण महिलाएं *नसीम अख्तर* *असिसटेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, श्रीमती बी0जी0 जैन कन्या महाविद्यालय , आगरा (उ0प्र0)*	350 – 353

दृश्य कलायें : शिक्षा, सृजन एवं व्यवसायीकरण

डॉ० ... रानी
... एसो० प्रोफे० : ड्राइंग एवं पेन्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पीजी) कॉलिज, मेरठ

सारांश

प्राचीनकाल से ही मानव ने चित्रकला के महत्व को माना–समझा है। चित्र सृजन से ही भाषा का विकास हुआ और ... विधाओं में कालक्रमानुसार चित्र सृजन होने के साथ–साथ कला अकादमियाँ, स्कूल भी सृजित होते चले गये। आज ... भारत में अनेक कला विद्यालयों के साथ–साथ विश्वविद्यालय स्तरों पर भी कला–शिक्षा दी जा रही है। समय के ...–साथ कला का स्वरूप भी बदलता चला गया। जो कला पहले मात्र सजावटी या सौन्दर्य प्रदान करने वाली वस्तु मानी ... थी, उसने आज रोजगार के क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत बना ली। आज कला में रोजगार की अनेक संभावनायें हैं ... कतिपय क्षेत्र, विज्ञापन कला, ग्राफिक डिजाईनिंग, चित्रकला, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, फैशन डिजाइनिंग, ज्वैलरी डिजाइनिंग, इन्टीरियर डकोरेशन, एनिमेशन जैसे अनेक अवसर हैं, जिनमें पारंगत हो कला शिक्षार्थी धनार्जन कर सकता है। ... सरकारी, गैर सरकारी संस्थायें भी कला के क्षेत्र में रोजगार प्रदान कर रही हैं। परन्तु आज की त्वरित गति वाली ...धारा में युवा कलाकार भी त्वरित गति से कला सृजन कर रहा है फलस्वरूप वह अपनी भावनाओं, आदर्शों को दरकिनार ... दृश्य के मन पर होने वाली चंचलता और आनन्द की अनुभूति को आधार मान धनार्जन एवं यश प्राप्ति में संलग्न है। ... के व्यवसायीकरण के आकर्षण में नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है। कला की अस्मिता को सुरक्षित रखने एवं अपना ... बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि शिक्षार्थी या कलाकार कला–तत्वों, आदर्शों का निर्वहन करते हुए अपनी ...व्यक्ति में प्रयोगधर्मिता के साथ अपने देश की परम्परा को संयुक्त रूप में पिरोकर उसे प्रदर्शित करे एवं रोजगार के ...अवसर प्राप्त करे।

...–संकेत : तकनीकी ज्ञान, सृजनात्मकता, व्यवसायीकरण, कला–शिक्षा, चुनौतियाँ, नैतिक मूल्य।

...तावना

शिक्षा मानव जीवन का आधार स्तम्भ है, जिसके अभाव में मानव जीवन के विकास की कल्पना ही नहीं की जा ...सकती। शिक्षा हमारे जीवन की उत्कृष्टता तथा उच्चता को सुनिश्चित करती है तथा मानव जीवन को सार्थक बनाती है। यह ...कहना अतिश्योक्ति न होगा कि शिक्षा मनुष्य के आत्मज्ञान तथा आत्मप्रकाश का साधन है। शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास ...करके उसे सभ्य, विद्वान, चरित्रवान तथा ज्ञानवान बनाती है। शिक्षा बालक को शारीरिक, मानसिक, भावात्मक तथा सामाजिक ...रूप से परिष्कृत करते हुए परिपक्व बनाती है। इतना ही नहीं, मनुष्य की आगे आने वाली पीढ़ी को उच्च आदर्श, विश्वास ...की सांस्कृतिक सम्पत्ति हस्तान्तरित करती है। शिक्षा का प्रमुख कार्य मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों, क्षमताओं को बाहर ...निकालकर उन्हें सम्वर्धित तथा विकसित करना है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो ...बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूपों को प्रस्तुत कर दे। स्वामी विवेकानन्द भी मानते थे कि शिक्षा ...ऐसी होनी चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो सके, मस्तिष्क की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर ...खड़ा हो सके। जिस प्रकार शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों को बाहर निकालती है, ठीक उसी प्रकार कला भी मनुष्य के ...अन्दर की भावनाओं, विचारों, संवेदनाओं को बाहर निकालती है। शिक्षा मनुष्य के विचारों को सही दिशा प्रदान कर उनमें ...उचित परिवर्तन करती है।

कला एक रचनात्मक, क्रियात्मक विषय है जिसमें सीखने की प्रतिक्रिया सृजनात्मकता पर निर्भर करती है। एक ...समय कला शिक्षक भाषण अथवा प्रवचन विधि के साथ–साथ प्रदर्शन द्वारा शिक्षण प्रदान करता है किन्तु समय के साथ–साथ ...कला का ध्येय भी परिवर्तित होता गया और कला में पारम्परिक बाध्यतायें न रहकर स्वतन्त्र अभिव्यक्ति बन गई। आज कला ...कला के मानक–मूल्य बदल गये हैं। आज कला अपने जिस पड़ाव पर है उसमें तकनीकों की बाढ़ आ गई है। प्रत्येक ...कलाकार एवं शिक्षक की पृथक तकनीक तथा शैली है। आज कला का व्यवसायीकरण बहुत बढ़ गया है, यह एक अच्छा ...संकेत है लेकिन व्यवसायीकरण के साथ–साथ एक और पहलू ध्यान देने योग्य है और वह है–राजनीतिकरण। आज छात्र, ...शिक्षक, कलाकार कृतियों की नकल से हेराफेरी करते नजर आते हैं।

...–पत्र का उद्देश्य एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य आधुनिक कला शिक्षा पद्धति पर प्रकाश डालते हुए उसकी रोजगारपरक दिशा ...से अवगत कराना है। आज कला शिक्षा में जहाँ नवीन आयामों, तकनीकों की वृद्धि हुई है, वहीं उसका मौलिक, नैतिक स्तर ...गिरा है। फलस्वरूप नवयुवक कलाकार कम समय में कृतियाँ बनाकर, उन्हें प्रदर्शित कर बेचकर एकाएक चर्चित होना ...चाहते हैं। युवा वर्ग अपनी इतिहासिक कला विरासत से लगभग अलग होकर सीधे बाजार में स्पर्धा के जरिये अधिक से ...अधिक धनार्जन चाहते हैं। इस प्रकार आज कला सृजन महज स्वान्तः सुखाय के लिये न होकर यश, धनलाभ हेतु हो रहा

अंक : प्रथम

रंगभूमि

कला-संस्कृति के विविध आयाम

सम्पादक

डॉ. पंकज कुमार वशिष्ठ

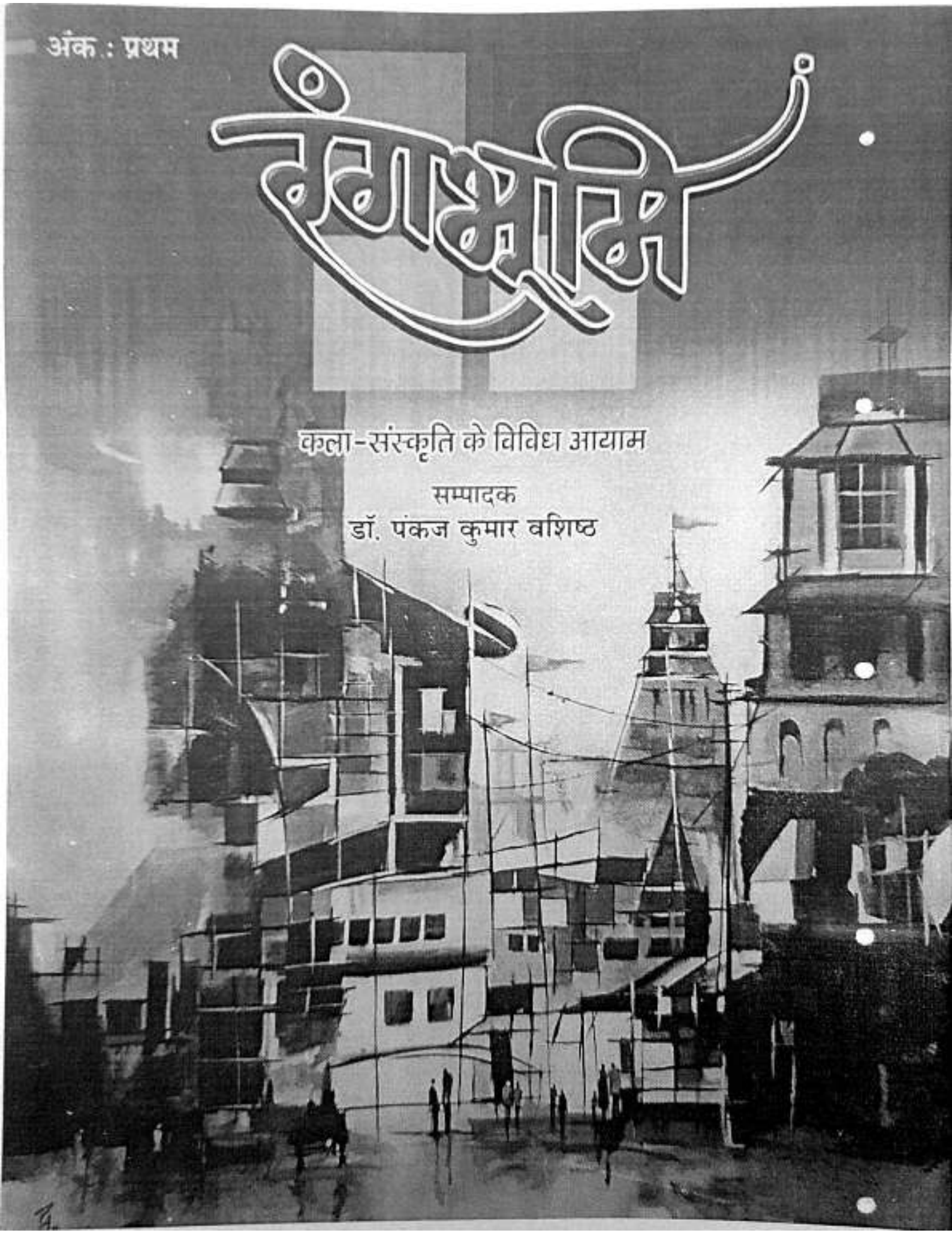

ISBN : 978-93-81130-48-3

प्रथम संस्करण : 2019

© संपादक

मूल्य : ₹ 550/-

इस पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य लेखकों के हैं, उससे प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिए प्रकाशक या सम्पादक किसी भी रूप में ज़िम्मेदार नहीं है।

प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, द्वितीय तल, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 (भारत)

विक्रय कार्यलय : 4806/24, प्रथम तल,
भरतराम रोड, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

संपर्क : +91-9599483886, 87, 88
ई-मेल : yashpublicationdelhi@gmail.com
वेबसाइट : www.yashpublication.com
Avilable at : amazon.com, flipkart.com

मुद्रक : यश प्रेस यूनिट, दिल्ली

अनुक्रमणिका

1. सृजन-साहित्य को प्रासंगिक करती रंगभूमि	डॉ० (श्रीमती) मीना कुमार	7
2. Depiction of Bulls as Bull's Eye in the Fine Art and Marketing	Prof. Shekhar Chandra Joshi	9
3. Artistic Environmental form and Folk Crafts	Prof. Sonu Dwivedi 'Shivani'	13
4. पूर्व देशों की बौद्ध कला	डॉ० ममता सिंह	16
5. अतियथार्थवाद से समृद्ध 'ए० रामचन्द्रन' की कला	डॉ० अर्चना रानी	19
6. कुमाऊँ के आभूषणों में प्रयुक्त रूपाकार	प्रो० मीनाक्षी हुड्डा	27
7. लोक-जीवन और जनतांत्रिक रचनाधर्मिता	डॉ० नीतू वशिष्ठ	30
8. प्रागैतिहासिक कला : प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का दर्पण	डॉ० नीलिमा गुप्ता	32
9. छापा-चित्रकला एक दृष्टिकोण	रजनीश कुमार गौतम	40
10. The Golden Ratio Mathematical Art in Nature – A Critical Analysis	Deepak Chandra Goel	45
11. कुम्भलगढ़ दुर्ग	डॉ० बीना जैन अमिता कुमारी	47
12. आधुनिक हिन्दी कविता में हालावाद के प्रवर्तक कवि बालकृष्ण हालावाद	डॉ० अलका मोहन शर्मा	51
13. भक्ति-रस की वेदी पर	डॉ० मनीष कुमार जैन	54
14. प्रकृति संरक्षण और स्त्री-शक्ति को समर्पित कलाकार : डॉ० ममता सिंह	डॉ० पंकज कुमार वशिष्ठ	56
15. The Origin of Music	Dr. Arti Sisodia	60
16. Literature & Art: Two Faces ' Coin'	Dr. Farheen Javed & Dr. Roohi Javed	63
17. समकालीन कला में बाजार की भूमिका	सचिन केसरवानी	67
18. भारत में चित्रकला का सफर	डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ	70
19. आधुनिक कला-समीक्षावाद के सामाजिक उद्गम	डॉ० अमृत लाल	75
20. Feminist Ethos in Kamaldas's Poetry	Ms. Poonam Sharma	78
21. कला में प्रतीकों का महत्त्व	श्रीमती आँचल चौरसिया	82
22. सृजन-संस्कृति के आदिम सरोकार	डॉ० रुचिन शर्मा	85
23. 'AIPAN' A TRADITIONAL ART FORM OF KUMAUN REGION OF UTTARAKHAND'	Dr. Vinod Singh	89
24. प्राचीन भारत में कला-शिक्षा	डॉ० मधु बहुगुणा	93
25. पहाड़ी शैली में कला और संस्कृति	डॉ० रनिका	96
26. भारतीय लोक-कलाएँ	डॉ० ऋतु	99
27. बदलते परिदृश्य में भारतीय समकालीन कला	आशुतोष कुमार सोनिया	102
28. समकालीन कला के अन्तर्गत प्रयोगधर्मिता एवं कला-बाजार का स्वरूप	शालू सिंह	104
29. लोक-कलाएँ संस्कृति व समाज की धरोहर	डॉ० सुनील कुमार	105

29/09/2021, 13:41 Document 290921_1.jpg

2019-2020

ISBN 978-81-923100-5-3

कला में धार्मिक संलयन

Devotional Fusion in Art

डॉ. अर्चना रानी

कला में धार्मिक संलयन

(Devotional Fusion in Art)

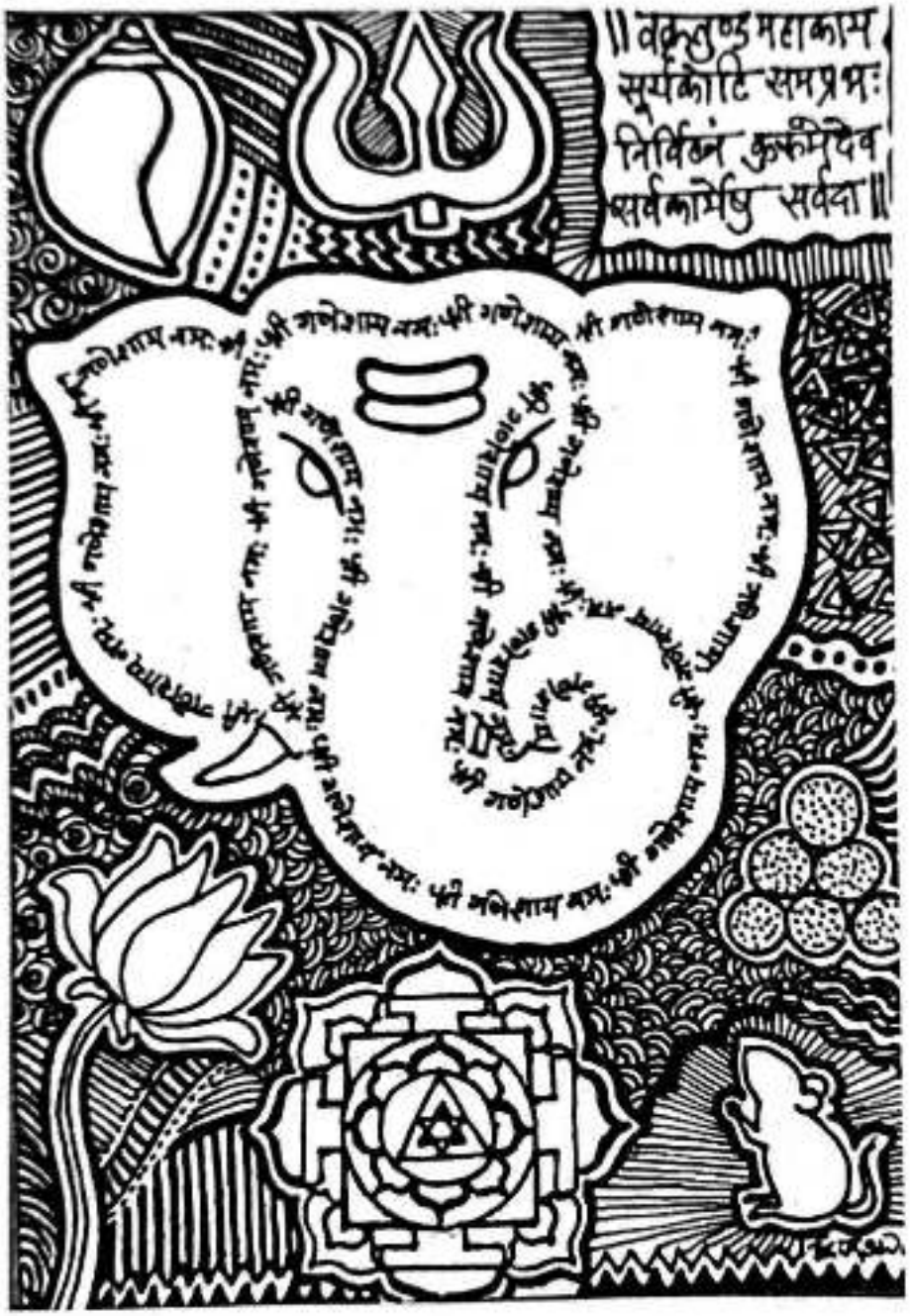

सम्पादक

डॉ० अर्चना रानी

विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर

विजुएल आर्ट : ड्राईंग एवं पेण्टिंग विभाग,

रघुनाथ गर्ल्स (पी० जी०) कॉलिज, मेरठ, उ० प्र० (भारत)

दूरभाष 0121-4050917 ई-मेल : drarchana.art@gmail.com

कला में धार्मिक संलयन

(Devotional Fusion in Art)

सम्पादक - डॉ० अर्चना रानी

ISBN - 978-81-923100-5-3

मूल्य : ₹ 3299
150 US$ (समय अनुसार प्रेषण-खर्च अतिरिक्त)
वर्ष : 26 अप्रैल, अक्षय तृतीया, 2020
प्रथम संस्करण

सम्पादित पुस्तक पृष्ठ - 276
@ सम्पादक
प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य स्वयं लेखकों के हैं, उसमें सम्पादक अथ
प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिये प्रकाशक अथवा सम्पादक किसी भी रूप में उत्तरद
नहीं है।

प्रकाशक
विजुएल आर्ट : ड्राईंग एवं पेण्टिंग विभाग (शोध केन्द्र)
रघुनाथ गर्ल्स (पी० जी०) कॉलिज, मेरठ, उ० प्र०, भारत-250001
(NAAC Reaccreditation C-III 'A' CGPA 3.13)
(College for Excellence)
w : www.rgcollege.org

अनुक्रम

अध्याय क्र०सं०	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	लोक संस्कृति-एक परिचय	डॉ० विजय एम० ढोरे, डॉ० बलवन्तसिंह भदौरिया	9
2.	कला साधक विनोद बिहारी	अशोक कुमार गुप्ता	12
3.	Creative Arts and Spirituality	Dr. Jaspal Singh	14
4.	Patuas : A Struggling Artist Community of India	Dr. Saroj K. Sarkar	19
5.	हिमाचली लघु चित्रों में धार्मिक अंकन	डॉ० नीलिमा गुप्ता	29
6.	कला और धर्म : जीवन की महानतम उपलब्धि	डॉ० पुनीता शर्मा	34
7.	भारतीय लोक कला 'स्वान्तः सुखाय की अनुभूति'	डॉ० मधु बाजपेयी	37
8.	चन्देल शासकों की अनुपम भेंट : खजुराहो मन्दिर	डॉ० अर्चना रानी	44
9.	कला में क्रान्ति- 'डिजिटल कला'	डॉ० गीता अग्रवाल	51
10.	गुजराती लोक संस्कृति में गरबा (काठियावाड़ और सौराष्ट्र के संदर्भ में)	सुश्री तृप्ति पटेल, डॉ० करुणा सिंह	55
11.	विनय शर्मा की संस्थापन कला	डॉ० मनोज टेलर	60
12.	भारतीय कला परम्परा (ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग)	डॉ० ऋषिका पाण्डेय	64
13.	सांस्कृतिक परम्परा के संरक्षक : कला मनीषी किशनचन्द आर्यन	डॉ० अनन्ता शांडिल्य	72
14.	आम्बेर के वैष्णव मन्दिरों का ऐतिहासिक एवं कलात्मक अध्ययन	डॉ० बीना जैन	76
15.	नाथ सम्प्रदाय	डॉ० नाजिमा इरफान	88
16.	कला और धर्म का सापेक्ष सम्बन्ध	डॉ० पुनमलता सिंह	91
17.	कला और धर्म	डॉ० संजीदा खानम, डॉ० संजय साहनी	94
18.	जैन धर्म और कला : समन्वयात्मक अभिव्यंजना	डॉ० सुषमा जैन	98
19.	पश्चिमी उत्तर प्रदेश के संदर्भ में कला-संस्कृति एवं धर्म	डॉ० मनोज बालियान	103
20.	कला द्वारा धार्मिक प्रसंगों का प्रतिबिम्ब	डॉ० प्रेमलता कश्यप	108
21.	धर्मसंगिनी कला-एक बहुआयामी अन्तर्सम्बन्ध	डॉ० पंकज कुमार वशिष्ठ	111
22.	धर्म की धुरी पर घूमती ललित कलाएँ	डॉ० रुचिन शर्मा	114
23.	लोक कला में धार्मिक अभिप्राय	डॉ० विनीता शर्मा	117
24.	कला व्यवसायों में लोककलाओं का धार्मिक संयोजन	डॉ० अमिता शुक्ला	121
25.	कला में धर्म-संस्कृति का समावेश	डॉ० रुचि विद्यार्थी	126
26.	कन्हैयालाल वर्मा के पौराणिक धार्मिक चित्रों का अध्ययन	डॉ० करुणा राजपूत	129
27.	भक्ति मूलक रचनाओं के चितेरे	डॉ० निधि शर्मा	133

28.	भारतीय कला में दशावतार	डॉ० आँचल सिंह	138
29.	देवभूमि गढ़वाल के प्रसिद्ध तीर्थ मन्दिर	डॉ० बबीता शर्मा	143
30.	राजस्थानी धर्म-संस्कृति में गणगौर पूजा	डॉ० रनिका	148
31.	धार्मिकता से सराबोर शान्ति दवे की कृतियाँ	डॉ० दिशा दिनेश	156
32.	भारतीय कला, धर्म में 'नटराज'	श्रीमती आकांक्षा गुप्ता	160
33.	धर्म, अध्यात्म का सम्बल : भारतीय कला	डॉ० शकुन सिंह	163
34.	राधा-कृष्ण विषय से समृद्ध किशनगढ़ शैली	डॉ० पंकज मौर्य	166
35.	आदिवासी जनजातीय गोंड कला	डॉ० अलका सोती	169
36.	चित्रकला एवं काव्य का धर्म में समावेश	डॉ० वर्षा रानी	172
37.	भारत में कुमांऊनी लोक जीवन की आस्था	डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ	174
38.	पटचित्रों में धार्मिकता का अंकन	डॉ० शालिनी थामा	179
39.	Influence of Religion in Indian Contemporary Art	Dr. Akansha Verma	182
40.	Life of the Medieval Saints : The Portrait of A Nation	Ramesh Sampui	186
41.	चित्रों के माध्यम से शास्त्रों को जीवन्त करते स्व० श्री रामकिशोर यादव जी	डॉ० वन्दना शर्मा	191
42.	Digital Art with Special Reference to Buddhist Mandala Art	Abhilasha Jaiswal	195
43.	समसामयिक तूलिका द्वारा धार्मिक अभिव्यक्ति	डॉ० पिंकी वर्मा	205
44.	लोककला द्वारा धार्मिक पर्वों पर कलात्मक संयोजन	कामना चौहान	211
45.	भारत के प्रमुख सूर्य मन्दिरों का परिचय	शबाहत	215
46.	धर्म एवं आध्यात्मिकता से प्रेरित : मनदीप सिंह मनु की डिजिटल कृतियाँ	शिवानी राठी, डॉ० अर्चना रानी	219
47.	भारतीय कला में श्रीराम का चित्रण	रजनी बंसल, डॉ० अर्चना रानी	225
48.	धर्म प्रधान लोक कला का बदलता व्यवसायिक स्वरूप	मिनाक्षी, डॉ० अर्चना रानी	229
49.	पश्चिम भारतीय कला शैली का जैन धर्म सम्बन्धी कल्पसूत्र	निकिता जैन	233
50.	राजस्थान की समकालीन कला में धार्मिकता का एक पक्ष	डॉ० हेमन्त कुमार राय, पारुल रानी	238
51.	अवतार सिंह पंवार द्वारा सृजित ईश्वर के अनेक रूप	अविमेश शर्मा	241
52.	झालावाड़ गढ़ पैलेस संग्रहालय की मूर्तियों में कला और धर्म का समागम	श्रीमती अनुपमा पंवार	247
53.	समकालीन वस्तुसापेक्ष कलाकार : ए० रामचन्द्रन	डॉ० हेमन्त कुमार राय, रिचा सिंह	252
54.	कला में धार्मिक संलयन की परम्परा	पूनम देवी, डॉ० अंजू चौधरी	257
55.	कला में धार्मिक प्रतीकों का संलयन	प्रीति कौशिक	261
56.	संस्थापन कला का धार्मिक पक्ष	डॉ० हेमन्त कुमार राय, रेनू रानी	263
57.	बुन्देलखण्ड की कला में शासकों की धार्मिकप्रियता	पवन कुमार	267
58.	Co-Relation of Commercial Art with Advertising Communication	Ayon Sarkar, Dr. Pooja Gupta	272

8

चन्देल शासकों की अनुपम भेट: खजुराहो मन्दिर

डॉ. अर्चना रानी, विभागाध्यक्ष एवं एसो० प्रोफे०, : ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग, आर० जी० (पीजी) कॉलिज, मेरठ

सारांश

चन्देल शासकों का काल पूर्व मध्यकालीन भारतीय इतिहास का गौरवशाली समय है। वह अपनी ऐतिहासिक, भौगोलिक, धार्मिक, कलात्मक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अपना अलग ही कीर्तिमान स्थापित करता है। इसी के साथ–साथ धर्म, साहित्य, वास्तुकला एवं मूर्तिकला के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण हैं। खजुराहो वास्तु एवं मूर्तिकला का प्रमुख केन्द्र था। इसी कारण खजुराहो के मन्दिर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति तथा विश्व धरोहर के रूप में भारतीय कला की अनुपम देन हैं। खजुराहो का शिल्पी शिल्पशास्त्र का अध्येता था, साथ ही साथ वह लोक जीवन का ज्ञाता भी था। वह देश के विभिन्न भागों में प्रचलित कला परम्पराओं से भी परिचित था। उन्होंने शास्त्र युक्त देव प्रतिमाओं के साथ–साथ मौलिकता का भी परिचय दिया है। खजुराहो मूर्तिशिल्प में चारूता और शृंगार, धर्म और काम, त्याग और भोग, आसक्ति और विरक्ति, देवत्व और मनुजत्व का अद्भुत एवं विलक्षण समन्वय है। शिल्पियों ने जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक चरण का वास्तविक और काल्पनिक अंकन अत्याधिक निपुणता के साथ किया है। उसने तत्कालीन मानव के आचरण–व्यवहार, हर्ष–विषाद तथा समाज–संस्कृति को मन्दिरों की भितियों पर अत्याधिक चारूता और कामनीयता के साथ उत्कीर्ण किया है। मन्दिरों पर अंकित विशेष अनेक रहे, जैसे युद्ध दृश्य, पारिवारिक दृश्य, गुरू और शिष्य, कार्यरत् श्रमिक, संगीत और नृत्यरत् कलाकार, ग्रामीण जन, जनसामान्य, मिथुन–युग्म और मिथुन समूह आदि। इन दृश्यों में चंदेल कालीन जीवन और संस्कृति मूर्तिमान हो गई हैं।

कला में धार्मिक संलयन (Devotional Fusion in Art) ISBN - 978-81-923100-5-3

15

नाथ सम्प्रदाय

डॉ. नाजिमा इरफान– असिस्टेंट प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, आर. जी. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

जीवन पद्धति धर्म की सरलतम परिभाषा होती है। धर्म ही मनुष्य को बताता है कि उसे अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिये। भारतीय संस्कृति का उदय वेदमन्त्रों के दर्शन से होता है। वेद भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम् रचना है। मध्यकालीन भारतीय धर्मसाधना में नाथमत का उदय उस समय हुआ जिस समय महायान वज्रयान में परिणत हो चुका था। नाथ सम्प्रदाय के ग्रन्थों में यद्यपि नाथ मत के लिए प्रायः सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योगि–सम्प्रदाय, अवभूमतल, अवभूत सम्प्रदाय आदि अभिधानों का प्रयोग मिलता है।1 परन्तु तत्कालीन अन्य मतों से पार्थक्य बोध के लिए नाथमत का प्रयोग अधिक सार्थक है। हठयोग प्रदीपिका की टीका में ब्रहानन्द ने इस सम्प्रदाय को नाथ सम्प्रदाय के नाम से ही अभिहित किया है। विभिन्न ग्रन्थों में हमें इस बात का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है कि इस मत का उपदेश श्री नाथ द्वारा किया गया। नाथ परम्परा के अनुसार आदिनाथ स्वयं शिव है।

नाथ सम्प्रदाय की उत्पत्ति किस प्रकार हुई और कितने आचार्य हुए इस विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। हठयोग प्रदीपिका में नाथ पथ के अनेक सिद्ध योगी अभी भी ब्रह्माण्ड में विचरण कर रहे हैं। नाथ सम्प्रदाय के अन्तर्गत बहुचर्चित और सर्वसाधारण नाम चार ही है– आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, जालन्धरनाथ, तथा गोरक्षनाथ। इनके विषय पर आधिारित हमें अनेक कथायें प्राप्त होती हैं। इन कथाओं में उनकी आश्चर्यजनक सिद्धियों का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। इन्होंने नाथ सम्प्रदाय के अर्न्तगत अनेकों पथ चलाये। नाथ मत का जब हम भारतीय संस्कृति में मूल्यांकन करते हैं, तो ज्ञात होता है कि भारतीय समाज में पूर्व प्रचलित वैदिक धर्म में जहाँ कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड तथा मर्यादित पारिवारिक एवं सामाजिक आचार पक्ष की प्रधानता थी, वहीं नाथ चिन्तन में यौगिक साधना पर विशेष बल दिया गया। नाथ सम्प्रदाय ने भारतीय संस्कृति के ऊपर एक न मिटने वाली छाप योग साधना के व्यवहारिक पक्ष को प्रस्तुत कर छोड़ी है। इस योग साधना का समाज पर इतना प्रभाव पड़ा कि तत्कालीन साहित्य भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

लगभग दस शताब्दी तक नाथ सम्प्रदाय ने राजस्थान को प्रभावित किया है। इस सम्प्रदाय की विकास यात्रा में उसके सामाजिक व साहित्यिक अवदान, नाथ सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण मठों मे भी चित्रकला भली भांति परिपोषित हुई है। जोधपुर के महामन्दिर में इस शैली के उत्कृष्ट नमूने आज भी देखे जा सकते हैं। यद्यपि राजस्थानी चित्रकला विषयवस्तु की दृष्टि से अत्यधिक विस्तृत है। राधाकृष्ण की विविध लीलाओं, रामकथा, महाभारत और भागवत की विभिन्न कथायें, नायक नायिका, भेद, राग रागिनी, बारहमासा, ऋतु वर्णन, दरबारी जीवन, उत्सव, शिकार, राजा रानियों का चित्रांकन, लोक कथायें आदि अनेक विषयों में राजस्थानी चित्रकला का विकास क्रम चला है।

16

कला और धर्म का सापेक्ष सम्बन्ध

डॉ. पूनमलता सिंह– असि0 प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, रघुनाथ गर्ल्स पी0जी0 कॉलिज, मेरठ

कला स्व की सत्ता के साथ, सर्वसत्ता के घनिष्ठ परिचय का साक्ष्य है। यह व्यक्ति और समष्टि के बीच एक सामंजस्य स्थापित करती है। साधारण आदि मानव हो या आधुनिक विज्ञान के ज्ञान से ओत–प्रोत आधुनिक मनुष्य सर्वसत्ता या सर्वशक्तिमान के गूढ़ रहस्य में उलझे हुए हैं। आज भी वैज्ञानिक न जाने कितने ही प्रश्नों का उत्तर खोजने में प्रयासरत् हैं। मानव पूर्व काल में विज्ञान पर आश्रित न होकर धर्म पर आश्रित था, पहले वह धर्म के माध्यम से अपने जीवन को सुलभ बनाता था, आज विज्ञान के द्वारा बना रहा है अर्थात् जिस प्रकार सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिये धर्म के रूप में मनुष्य के सम्मुख अनेक मार्ग रखे गए हैं। धर्म और विज्ञान में यदि अन्तर है तो केवल इसका कि एक रहस्य को सत्य मानकर ईश्वर में अधिक विश्वास करता है तो दूसरा रहस्य का उद्घाटन करते हुए सत्य की खोज में लगा है। वैसे तो धर्म में भी सत्य का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, पर एक सत्य में विश्वास कर चुका है दूसरा सत्य को खोज रहा है दोनों ही धर्म मनुष्य को सुखी बनाना चाहते हैं।

धर्म किसी एक व्यक्ति द्वारा स्थापित नहीं किया जा सकता है। सम्प्रदाय अवश्य व्यक्ति विशेष द्वारा स्थापित किये जा सकते हैं। कर्म, ज्ञान एवं भक्ति तीनों के स्वभाव अलग–अलग होते हैं यही कारण है कि गीता में कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और भक्ति को पृथक् किया गया है। धर्म एक कर्म की भाँति होता है जिसका पालन कलाकार एवं कलाएँ करती हैं। प्राचीनकाल में कलाओं का लक्ष्य भी धर्म प्राप्ति ही था। कलाएँ धर्म के लिए थीं। धर्म पहले था कलाएँ बाद में थीं। धर्म प्रचार में कलाओं ने उद्घोषक के रूप में कार्य किया और यह केवल भारतीय परिप्रेक्ष्य में ही न होकर, वरन् वैश्विक पटल पर भी सत्य ही माना जायेगा अन्यथा जहाँ प्रारम्भिक ईसाई धर्म में कला का प्रयोग निषेध किया गया वहीं आगे धर्म के प्रचार–प्रसार के लिये चित्रकला का सहारा लेकर उसे साधारण जन तक पहुँचाया गया। कला सदैव धर्म की सेवा में रत् रही उसको आगे बढ़ाने में उसको जनमानस में व्याप्त करने में कला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

धर्म के स्थापन से पूर्व भी आदि मानव ने आद्यि भौतिक सत्ता को स्वीकार करते हुए प्रतीकों का पूरा संसार ही रच डाला और उनको धार्मिक प्रतीक के रूप में स्थापित किया। बौद्ध धर्म का प्रचार भी कला के ही माध्यम से यत्रतत्र सर्वत्र किया गया जिसमें चित्र, मूर्ति व वास्तु तीनों कलाओं का संयुक्त प्रयत्न स्पष्ट परिलक्षित होता रहा है। इसी प्रकार जैन धर्म का प्रचार भी कलाओं के माध्यम से ही किया गया। आज भी गोमतेश्वर की मूर्ति हो या

46

धर्म एवं आध्यात्मिकता से प्रेरित : मनदीप सिंह मनु की डिजिटल कृतियाँ

शिवानी राठी– शोध छात्रा, ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पी0जी0) कॉलेज, मेरठ
डॉ0 अर्चना रानी– शोध निर्देशिका, ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पी0जी0) कॉलेज, मेरठ

सारांश :– धर्म एवं कला भारतीय संस्कृति के वह पहिये हैं जो प्राचीन काल से निरन्तर कार्यरत् है। धर्म के अभाव में जहाँ मानव जीवन की कल्पना भी अविस्मरणीय है वहीं कला के अभाव में मानव के सांस्कृतिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जिस प्रकार वैदिक काल से ही हमारे पूर्वजों ने धर्म की स्थापना के साथ मानव के धार्मिक जीवन को एक नई दिशा प्रदान की, उसी प्रकार कला ने सदैव ही मानव को अधिक कल्पनाशील एवं सृजनात्मक बनने की ओर अग्रसर किया। एक ओर जहाँ धर्म हमें शान्ति एवं सौहार्द्ध के पथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान करता है वहीं कला हमें नवीन सृजन की ओर उन्मुख करती है, क्योंकि कला का अर्थ ही नित सृजन है जिसका कोई अन्त नही है, मात्र सृजन एवं पुनः सृजन है। कला के अभाव में मानव जीवन अपूर्ण है जिसे पूर्ण करने के लिए मनुष्य प्रत्येक समय रचनाएँ सृजित करता रहता है, इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह रचना चित्रकला ही हो क्योंकि सम्पूर्ण मानव जीवन अनेक कलाओं का मिश्रण है, फिर चाहे वह कलाकृतियों के निर्माण से सम्बन्धित हो या किसी अन्य कार्य से। कला एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसका कोई अन्त नहीं है यदि अन्त हो गया तो सृजन का अन्त हो जायेगा और सृजन के अभाव में सृष्टि का स्वतः ही अन्त हो जायेगा।

धर्म एवं आध्यात्म, प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहे हैं। भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति, धर्म के रूप में, ही दृष्टिगत होती है। धर्म एवं आध्यात्म हमारे जीवन का वह अंग हैं जो हमें सदैव परमेश्वर के निकट होने की अनुभूति प्रदान करते हैं। वहीं दूसरी ओर, कला के द्वारा हम सदैव अपनी प्राचीन परम्पराओं एवं लोक मान्यताओं का निर्वहन करते हैं। यदि हम वैश्विक स्तर पर कला का अध्ययन करें तो हम देखते हैं कि विश्व की अधिकांश कलाओं की उत्पत्ति का आधार धर्म ही है जो भारतीय कला के रूप में सर्वाधिक प्रमाणिक है। कलाकारों ने कला के माध्यम से धार्मिक मान्यताओं को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने का कार्य किया है जैसा कि राजा रवि वर्मा की कला में दृष्टिगत होता है। कलाकार सदैव से ही धार्मिक मान्यताओं को आधार बनाकर कलाकृतियों का निर्माण करते आये हैं यह प्रक्रिया आज भी अनेक समकालीन कलाकारों की कला में दर्शनीय है। आज कला के विभिन्न नवीन स्वरूप नवीन माध्यम एवं तकनीक हमारे समक्ष विद्यमान हैं किन्तु कलाकारों के विचारों में आज भी धार्मिक मान्यताएं एवं परम्पराएं विद्यमान हैं जिन्हें आधार बनाकर कलाकार, नित नवीन कलाकृतियों का निर्माण कर रहे हैं, जिसका विस्तृत विवेचन इस शोध पत्र का आधार है।

47

भारतीय कला में श्रीराम का चित्रण

रजनी बंसल– शोधकर्त्री, चित्रकला विभाग, आर.जी. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ
डॉ. अर्चना रानी– विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, आर.जी. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

सारांश

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। श्रीराम भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ है। प्राचीन काल से ही धर्म, कला व संस्कृति की दृष्टि से श्रीराम का विशेष महत्व है। रामायण भारतीय संस्कृति का महाकाव्य है। चित्रकला आदिकाल से ही भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत करती है। श्रीराम का चित्रण कला में प्रत्येक काल में होता रहा है। जीवन की कोई भी समस्या हो, श्रीराम के किसी न किसी प्रसंग से प्रेरणा मिलती है। श्रीराम कहीं पारिवारिक, कहीं आदर्शवाद, मानवतावाद, कहीं बन्धुत्ववाद एवं त्याग, क्षमा, धैर्य के रूप में प्रस्तुत किये जाते रहे हैं। न केवल हिन्दू शासकों द्वारा, बल्कि मुगल काल में तो अकबर के आदेश पर रामायण का फारसी अनुवाद कराया। इस प्रकार धैर्य और सहनशीलता के प्रतीक श्रीराम का चित्रण मुगलकाल से लेकर राजस्थानी, पहाड़ी, मधुबनी, वार्ली, लोक कला व आधुनिक कला सभी में व्यापक स्तर पर हुआ है। श्रीराम की गाथा विभिन्न युगों से आज तक चली आ रही है तो भारतीय कलाकार की तूलिका कैसे वंचित रह सकती थी।

शब्द–संकेत : श्रीराम, विश्व, धर्म, चित्रकला, रामायण, संस्कृति, काल।

प्रस्तावना– भारतीय कला संस्कृति की संवाहिका है। भारतीय संस्कृति का विशाल कैनवास है, उसे जानने के लिए उपवेद, शास्त्र, पुरातन एवं प्राचीन साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। भारतीय चित्रकला में ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाओं का महत्व आदिकाल से चला आ रहा है, जो आज भी अपने धार्मिक भावों के साथ सर्वश्रेष्ठ रूप में दिखाई पड़ता है, जिसमें पूर्ण रूप से धार्मिक संस्कृति की झलक दिखाई पड़ती है। "विश्व की सभी कलाओं का जन्म धर्म के साथ ही हुआ है। कला के उद्भव में धर्म का बहुत बड़ा हाथ है।"[1] किसी भी देश का विकास वहाँ की कला एवं संस्कृति पर निर्भर करता है। संस्कृति काल एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। भारतीय कला युगों–युगों से धर्म प्रधान है। भारतीय संस्कृति धार्मिक क्षेत्र में ललित कलाओं से परिपूर्ण विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। वास्तव में धर्म ही भारतीय कला का प्राण है। कला एवं धर्म एक–दूसरे के पर्यायवाची है। कला में विचार की किरणें एवं धर्म में उपासना की किरणें हैं। धर्म ने कला को आधार प्रदान किया। कला ने धर्म को स्थायित्व प्रदान किया।

48

धर्म प्रधान लोक कला का बदलता व्यवसायिक स्वरूप

मीनाक्षी– शोध छात्रा, ड्राइंग एण्ड पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ
डॉ0 अर्चना रानी– विभागाध्यक्ष, ड्राइंग एण्ड पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ

सारांश– प्राचीन काल से लोक कलाओं का महत्व चला आ रहा है। चाहे कोई भी देश हो, परंतु लोक कलायें हर देश में, राज्यों में पनपती हैं। वह मनुष्य में विकास की कामना की द्योतक हैं। किन्तु आज का युग इतनी नवीनता चाहता है कि कलाकारों ने लोक कलाओं में भी नवीनता का उदय करने का प्रयत्न किया है। लोक कलाएँ अब भित्तियों पर ही न रह कर कागज व कैनवास, कपड़ा, दरी, कालीन, बर्तनों, चूड़ियाँ, घरेलू वस्तुओं पर भी की जाने लगी हैं । पुराने प्रतीक देवी–देवताओ को छोड़ कर कलाकार सामाजिक जन–जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर कलाओं में परिवर्तन करने का संकल्प लिए हैं। पुराने प्रतीकों से कलाकार व दर्शक अब ऊब चुका है वह भी नवीनता चाहता है लोक कलाओं के मध्य में व समाज मे लोक कलाएँ व्यवसायिक कला का रूप धारण कर चुकी हैं जिससे अर्थव्यवस्था में सुधार आया है और यह कार्य पसंद भी किया जा रहा है। लोक कलाएँ अब भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी पसंद की जाने लगी हैं। भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ मौलिकता का कारण लोक कलाएँ हैं। लोक कलाएँ न नयी होती है न पुरानी। वह तो एक प्राचीन वृक्ष की शाखाओं की तरह होती है जो यत्र तत्र विचरण करती रहती है।

शब्द संकेत– लोक कलाएँ, समकालीन, विविधता, अभिव्यक्ति, धर्म, समाज।

प्रस्तावना– भारत एक ऐसा देश है। जिसमे विभिन्न धर्म से संबंधित लोग निवास करते हैं। भारत में अलग–अलग धर्म को मानने वाले लोग रहते है उनके रीति–रिवाज विभिन्न होते हैं, कलाएँ भी अलग–अलग प्रकार की होती हैं। जिस प्रकार हिन्दू धर्म के लोग देवी देवताओं की पूजा–अर्चना में विश्वास रखते हैं उसी प्रकार ईसाई धर्म मे क्रॉस को पवित्र मानते है और संत ईसामसीह की पूजा करते हैं। मुस्लिम धर्म में कुरान– शरीफ को अधिक महत्व देते हैं और पंजाबी लोग गुरु ग्रंथ सहिब व गुरुद्वारों में जाकर अपने गुरुओं की वंदना करते हैं। प्रकार भारत में अलग–अलग धर्म को मानने वाले समुदाय है परंतु उनका आश्य लोक कल्याण में ही निहित होता है। लोक का अर्थ बहुत ही व्यापक है। जिसमे विशाल प्रकृति समाहित है। लोक का आशय सभी धर्म, जाति, समुदाय, वर्ग, बिरादरी, सम्प्रदाय, है। भारत में बहुत से वैज्ञानिकों ने जन्म लिया है जो अलग–अलग धर्मो को मानने वाले थे किंतु उनके विचार समाज व लोक के कल्याण के लिए ही थे अपना कोई स्वार्थ उनके मत में नहीं था। लोक संस्कृति व धर्म में मनाये जाने वाले त्यौहार व उत्सव भी व्यक्ति व समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य करते हैं। मनुष्य का जन्म जब समाज में हो जाता है तो वह एक समाज व समूह का हिस्सा बन जाता है। वह धर्म मे अनुसार सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप अपने परिवार और समाज मे रहकर अपना विकास करता है। दीपावली में गणेश व

Innovations in Science and Technology

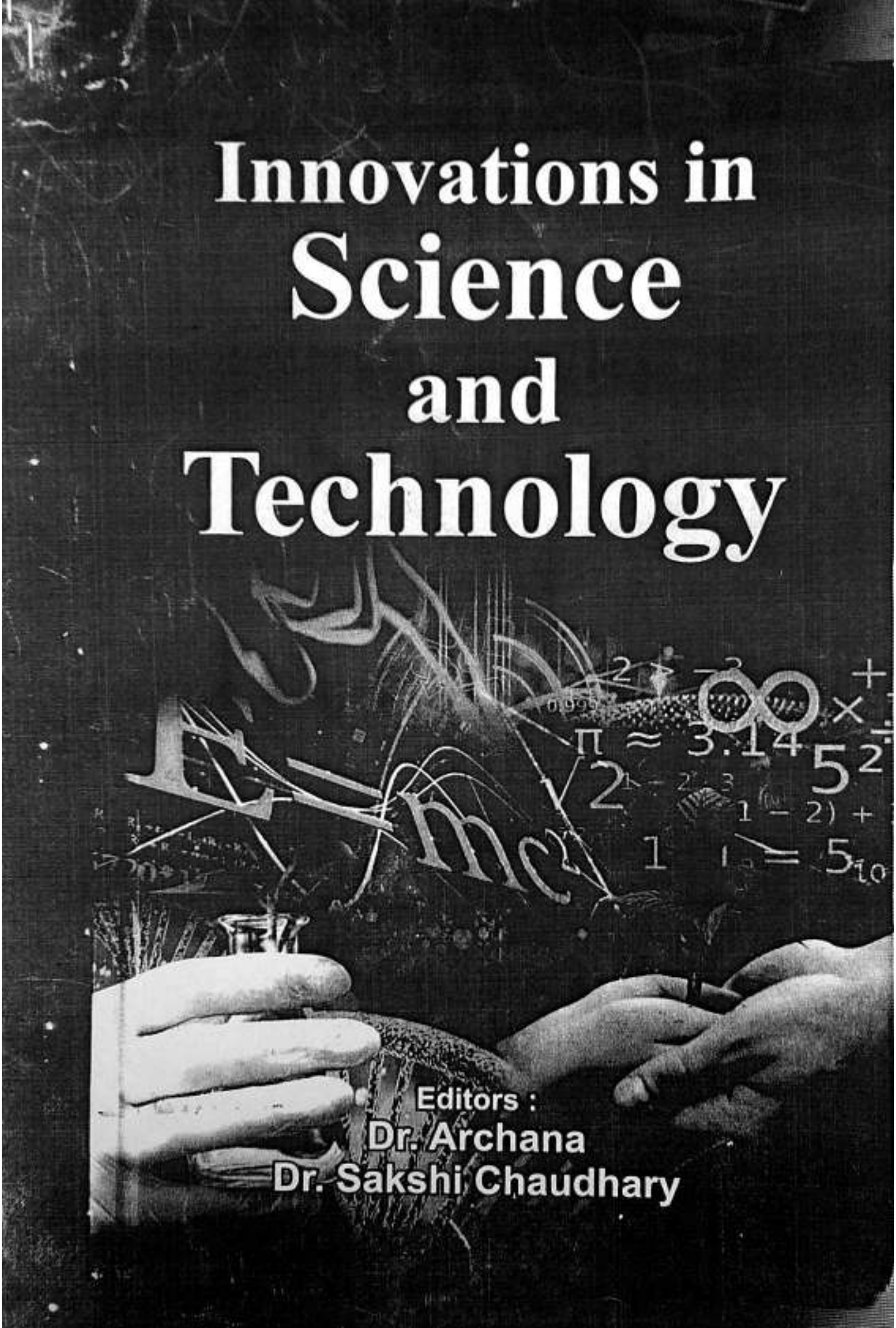

Editors :
Dr. Archana
Dr. Sakshi Chaudhary

It is a matter of great pleasure for us to present this book entitled "INNOVATIONS IN SCIENCE AND TECHNOLOGY", before the readers and lovers of science and technology.

The motto underlying the book is "SCIENCE IS ENJOYABLE".

Without innovation we cannot advance. We cannot imagine our usual life without some advancement, caused by science and technology progress. In fact our existence changes in minutes now, something new appears each single day, what makes human life easier and more comfortable in some aspects. In this book we have tried to compile such things together from all branches of science.

Dr. Archana is an Assistant Professor in the Department of Chemistry, Meerut College, Meerut. Prior to this she was awarded senior research fellowship from C.S.I.R., New Delhi. She did her Doctorate from L.L.R.M, Medical College, Meerut and played a major role in the synthesis of newer heterocyclic compounds as anticonvulsant agents. She has published 30 research papers in National and international journal and presented paper in various National and International Seminar. She has 19 years of research experience and 11 years of teaching experience. She has edited one book.

Dr. Sakshi Chaudhary is an Assistant Professor in Department of Chemistry, D.N. College Meerut. She earned his M.Sc and Ph.D from C.C.S. University Meerut. She also qualified U.G.C-C.S.I.R –N.E.T and G.A.T.E. She started his career as Assistant Professor in R.K. (PG) College Shamli (U.P.) since Jan 2009 and got transferred in D.N. (P.G) College Meerut on 07 jan 2016. She has published 10 research papers in International journal and presented papers in various National and International Seminar.

SWASTIK

SWASTIK PUBLICATIONS

213, Vardan House, 7/28, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi-110002
Phone : 9968482939, 9899462604
e-mail : swastik_books@yahoo.com

₹ 1095/-

ISBN 978-93-87367-67-8

9 789387 367678

11. Occurrence and Measurement of Radon and Thoron in Natural Environment — 89
Sachin Kumar

12. Waste Management and Green Chemistry — 98
Dr. Anita Sharma

13. Recent Biotechnological Advances in Medical Sciences — 108
Swagata Chatterjee, Ranjeeta Bansala and Navin Kumar

14. Cadmium – A Priority Heavy Metal — 115
Dr. Garima Pundir

15. Influence of Pollution and Population on Environment — 122
Vibha Sharma

16. Evolution and Importance of Different Type of Protein Phosphatases — 129
Hari Om Sharma

17. Metal Dependent Phosphatase, Protein Tyrosine Phosphatase, and Protein Kinase: Occurrence and Physiological Significance — 143
Hari Om Sharma

18. Industrial Waste Management — 155
Kalpana Mittal

19. Rheological, Inhibition, and Different Type of Stress Studies of Protein Serine/ Threonine Phosphatase — 162
Hari Om Sharma

20. Sea Pollution by Ships and Cleaning Methods — 175
Dr. (Mrs) Nupur Shishodia Mudgal and Mr Bhopal Singh

21. Formation of Shock Wave — 183
S. K. Sharma

22. Pollution Caused by Chemicals — 186
Dr. Ritu Verma

23. An Introduction to Polymers — 198
Alka Chaudhary

24. Cancer: An Overview — 210
Renu Verma

25. Food Adulteration – Determination and Impact on Human Health — 215
Sakshi Chaudhary

14

Cadmium – A Priority Heavy Metal

Dr. Garima Pundir
Assistant Professor, Department of Zoology, R.G.P.G College Meerut

Introduction

Intense activities in industrial and agricultural sectors have inevitably increased the levels of heavy metals in natural waters. Heavy metals play a major role among pollutants of environmental concern **Singer *et al.* (2005).** They are serious pollutants of aquatic environment because of their environmental persistence and ability to be accumulated by aquatic organisms **Veena *et al.* (1997)**Those metals are called heavy metals, which are having comparatively high density and relatively moderate or low chemical activity as compared to rest of metals. Out of 83 known metals, 68 metals should be called heavy metals because they are several times heavier than water. Blum, 1997 accentuated that heavy metals are usually with densities greater than 5gm/cm^3. Heavy metals like zinc, copper, lead, chromium, nickel and cadmium are discharged in the water bodies without extracting the pollutant **Singh *et al.* (2008)** which cause serious threat to life of fishes.Heavy metals and their compound are life threatening for aquatic organisms. They are unique, as they are neither created nor destroyed by human agency, which only transports and transforms them into various products. The toxic effects of heavy metals received greater attention ever since Minimata disease caused neurological disorder and death in Japan in the year 1955 **Aweke and Taddese**

27. Solid Waste Management and Disposal Method 223
Dr. Meenakshi Yadav

28. Sustainable Development: A Goal Less Achieved & Miles To Go 232
Manisha Singhal

29. Computational Methods: Hartree-Fock and Density Functional Theory (DFT) 239
Vinita, Jayant Teotia, Isha Rathi, Vishrut Chaudhary, Seema, M.K.Yadav

29. Extraction & Preliminary Phytochemical Screening Techniques in Phytochemical Research 249
Dr. (Ms) Vinay Prabha Sharma

30. Conducting Ploymers 260
Radha Mishra

31. Design, Synthesis and Evaluation of Novel Quinazolin -4(3H)-onyl Derivatives of Azetidinones as Potential Anticonvulsant Agents 270
Anandveer Sindhu

32. Pollution — Harm to Our Environment 283
Dr. Shweta Jain

33. Toxic Substances in Our Environment 292
Dr. Abha Awasthi

34. Medicinal Herbs 304
Dr. Nupur Prasad

35. Constrained Optimization with Nelder Mead and Non Uniform Based Self Organizing Migrating Algorithm 309
Rahul Kumar, Seema Agrawal, Dipti Singh

Index 323

27

Sustainable Development: A Goal Less Achieved & Miles To Go

Manisha Singhal
Assistant Professor, Deptt. of Chemistry. RGPG College. Meerut

Introduction

Off late numerous studies have been pointing that the interest in research concerning Education for Sustainable Development (ESD) has grown considerably.

"Sustainable development seeks to meet the needs and aspirations of the present without compromising the ability to meet those of the future".

The World Commission on Environment and Development (Brundtland Commission) defined sustainable development as "development that meets the needs of the present without compromising the need of future generations to meet their own needs" (Bruntland Commission – see World Commission on Environment and Development, 1987).

This sector is becoming more visible and significant in a global world affected by serious environmental issues and by growing social, economic, and political inequality.

Hence, sustainable development is a real challenge for our society. Climate change, global warming, depletion of natural resources,

Contents

Preface v

1. Soil Test Methods for Available Nitrogen, Phosphorus and Potassium 1
   Anuradha Singh
2. Challenges and Opportunities of Green Chemistry for Sustainable Development 5
   Anandveer Sindhu
3. Advanced Reproductive Technologies for Genetic Improvement of Farm Animals 15
   Seema Sharma
4. Optimum Conditions for Composting from Household Solid Waste Material by Using Microorganisms and Earthworms 22
   Dr. Anita
5. Adversed Effects of Air Pollution on Human Health 33
   Dr. Indu Singh
6. Biodegradable Plastics 45
   Archana
7. Applications of Biosurfactants for Cleaner Environment 56
   Deeksha Yajurvedi
8. Phytochemicals: An Overview 64
   Renu Saraswat
9. Benefits of Green Chemistry 76
   Dr. Anita Sharma
10. Recent Advances and Innovations in Material Chemistry 82
    Ranjeeta Bansala and Navin Kumar

7

Applications of Biosurfactants for Cleaner Environment

Deeksha Yajurvedi

Assistant Professor, R. G. P. G. College, Meerut

Introduction

Contaminated soils and water poses a major environmental health problem to man and biosphere resulting in decreased agricultural productivity and deteriorating health of the ecosystem. This problem is being addressed and solved by applications of biosurfactants which has emerged as a new trend to clean up the polluted soils. Bio surfactants are surface stimulated compounds generated by microorganisms. They are very helpful in field of agriculture by remediating heavy metals, hydrocarbons. They have the capability to increase the stabilisation of oil or water emulsions and effective for removal of bulk arsenic from slime pits. Bio surfactants increase the constitution of soil by removing the heavy metals from contaminated soils by process of soil remediation. In contrary to their chemical counterpart, they are biodegradable, not harmful to environment and less toxic. On the basis of types of types of microorganisms and chemical composition, they may include hydrophilic moiety as amino acids, peptides, monosaccharide or polysaccharides and hydrophilic as saturated or unsaturated fatty acids. Microbial bio surfactants like *surfactin, lichenysin* and *emulsan* have ability to increase oil recovery. *Iturin* and *fengycin* are found to have

COVID-19: Impact, Challenges and Implications in India

About Editors

Dr. Ajit Singh completed his Ph.D in Economics/Agriculture Trade from CCS University, Meerut. He is working as Assistant Professor in Department of Economics at M.M.H. College, Ghaziabad. He have more than 12 years of experience. He published more than 20 research papers in many National/Internatinoal journals, seminars and conferences. He also published 3 books in Economics subject. Dr. Singh is a lifetime member of Indian Economic Association and Uttar Pradesh and Uttarakhand Economic Association.

Dr. Preeti Sharma is Assistant Professor and head in the Department of Home Science, Government P.G. College New Tehri (Tehri Garhwal). She has 21 years of teaching experience. She has written and presented more than 20 research papers in International and National Seminar and Conferences. She has also delivered invited talks and acted as chairperson in many national and international Conferences. Her research interests include Child Psychology, Food and Nutrition, Textile, Extension Education. She is associated with various colleges and universities as subject expert.

Vandana Publications

Branch Office : UG-4, Avadh Tower, Kaysons Lane, Hazratganj, Lucknow-226001, INDIA.

Contact Numbers : 0522-4108552, +91-9839-748474, +9196960-45327

E-mail ID's : info@vandanapublications.com, mail2vandanapublications@gmail.com

Visit us : www.vandanapublications.com

ISBN : 978-81-946476-0-7

8. **Ashok K. Sharma**
Fate of Legal Education during and after COVID - 19 Pandemic: The Imperative of Online Education – A Special Reference of E – Content 96

9. **Dr. Niranjana Sharma and Sparsh Sharma**
Impact of COVID-19 on Education System in India: A Review 101

10. **Dr. Suresh Chand and Akshat Raghunath Daksh**
Covid-19 Impact on Education in India 107

11. **Dr. Suminder Verma**
Impact of COVID-19 on Teaching Learning Process 120

12. **Ranjanbala Gohil**
Impact of COVID-19 on Teaching and Learning Process 126

13. **Dr. Seema Kumari**
Impact of COVID-19 on Teaching- Learning Process 142

14. **Mrs. Alka Rani**
Impact of Covid-19 on Higher Education in India 148

15. **Dr. Garima Pundir**
COVID -19 Pandemic and Lockdown – Role and Importance of E–Learning 164

16. **Madhuri Kohli**
Covid-19: Impact and Opportunities created for Education Sector in India 170

Section III
Indian Economy

17. **Monica and Dr. Ajit Singh**
Covid-19 Related Issue and Challenges of Indian Economy 183

COVID -19 Pandemic and Lockdown – Role a
Importance of E–Learning

Dr. Garima P

1. Introduction

World Health Organization (WHO) on 20 January 2020 co
COVID which detected in Wuhan, China on 31 December 20
virus spreads through human to human transmission due to this the
shutdown of the education institutions which led to many apprehe
among the students and teaching fraternity. However the te
fraternity has been adopting innovative methods to interact wi
students and focusing on the curriculum. There are important fact
order to build good nation and one of these factors is educa
Education can be considers as a backbone of any country in the wo
Usually in disaster time the governments are used to suspend the sch
universities and other governmental institutions for sometimes. W
the world is fighting the unique and dangerous virus called COVID
The governments of most countries have ordered to lockdown and a
the people to stay at their homes due to the danger of this virus on h
life. The teachers in different countries have started using e-learni
teaching the students in this period. Technology has been advancing
can say that we are living in technological revolution. The technol
has a vital role in different filed such as business, medicine,
education etc. e-Learning can be defined as the use of computer
internet technologies to deliver a broad array of solution to en
learning and improve performance .Other words have begun also

[1]Assistant Professor, Department of Zoology, R.G.P.G College Meerut, India

स्मारिका एवं शोध-पत्र सारांश

राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा : चुनौतियाँ एवं संभावनाएं

एवं

उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसायटी

इक्कीसवाँ वार्षिक अधिवेशन

19.20 जनवरी 2019

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार

आयोजक

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रामपुर-244901 (उ०प्र०)

("नैक" का तृतीय चरण पूर्ण)

SOUVENIR

National Seminar

on

"Higher Education in Present Context : Challenges and Prospects"

&

"21st Convention of U.P. Government Colleges Academic Society"

19-20 January 2019

Sponsored by:
Department of Higher Education Govt. of Uttar Pradesh

Organised by :
Government Raza P.G. College, Rampur (U.P.)
(Re-accreditated 'B' by NAAC)
Affiliated to M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (U.P.)
Phone : 0595-2340111 (O)
Website : www.grpgcrampur.com

SOUVENIR

National Seminar on

"Higher Education in Present Context : Challenges and Prospects"

&

"21st Convention of U.P. Government Colleges Academic Society"

Editors :
Prof. (Dr.) R.P. Yadav
Dr. B. Tabassum

ISBN No. : 978-81-937071-6-6

Printed by:
Ocean Publication
Near Hanuman Temple, Miston Ganj
Rampur (U.P.)-244901
#904544373

Published by:
Govt. Raza P.G. College
Rampur (U.P.)-244901
(Completed Third Cycle of "NAAC")
Affiliated to M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (U.P.)
Phone : 0595-2340111 (O)
Website : www.grpgcrampur.com

COMMUNITY ANALYSIS OF FREE LIVING PLANT NEMATODES AROUND THE ROOT ZONES OF *MANGIFERA INDICA*(AT HAPUR) REGION

Mrs. Shashi Bala
Asst. Prof. Dept. of Zoology, R.G. P.G. College Meerut

ABSTRACT

Free Living plant nematodes are small sized, microscopic, world widely distributed round worm. They are occupy every Niche Of environment & their abundance depend upon many factors like type of soil, vegetation etc. Most of the free-living nematode are ectoparasite. They freely move in soil feed upon root surface bacteria, fungi etc. Most of the plant nematodes caused various disease to plant, stunting growth, mechanical damage gall formation, wilting of plant etc. But free living plant nematodes are beneficial to plant because they decompose the organic matter, recycling of Nutrient. In Present study soil samples were collected from 0-30 cm vertical depth and 30-60 cm horizontal depth from around the root of Mango plant at Hapur region from July to November. The Nematodes were extracted by Decanting &Sieving techniques (Cobb 1918) was applied. Under the microscopic examination free-living nematodes were recorded as minimum percentage 14.2% and 8.88% at both vertical as horizontal depths in comparatively to other nemic fauna (parasitic and sluggish). So occurrence of freeliving plant nematodes at both depth affected by various edaphic factors, Ph, Temp, moisture, Seastional change and unavailability of various food Resources etc.

Key word : Free Living Nematodes, Stunting, Bacteria, Fungi

INTRODUCTION

Soil Nematode are ubiquitous, rounded body, worm like organism. They form most dominant group under the ground communities in any agro ecosystem. Nematode community are dependent upon many factors, like trophic group, ecological habitat, food web and life history ofPlant nematode are best indicator of environment and quality of soil.(Ferris etal 2001, Yeates 2003, Bonger 1990, Liang etal 2009). The soil Nematodes are categorized in five or eight group according to their feeding habit (yeates 1993)like bacterial feeder, fungal feeder, algae feeder, Predatory, sedentary and omnivores, The distribution of freeliving nematodes in soil depend upon basic ecological process like decomposition of organic matter and nutrient cycle. (Sochovaetal 2006) Most of the plant nematodes adversely affect the agricultural production and act as major pest. It causes major disease to plant but many of researcher found that freeliving nematodes are beneficial. They enhance ecological process of decomposition, Nutrients mineralization and disease suppression. Communities of Plant nematodes depend upon type of host plant Perrienial crops are more beneficial because they are having very long root system and having complex food web long growing season for freeliving nematodes (microbes) (Glover JD Cox CM2007, Van bruggen AHC1995)

Learning Media
Publication

GREEN INITIATIVES
And
SUSTAINABLE DEVELOPMENT

Dr. Subhash Kumar
Editor

GREEN INITIATIVES
And
SUSTAINABLE DEVELOPMENT

About the Book

Green initiatives and sustainable development approach is aimed at turning environmental challenges into opportunities. It is based on the understanding that an inclusive green economy, which features sustainable consumption and production patterns, is at the core of sustainable development. Green initiatives are not just about the environment, it also offers multiple benefits like job creation, poverty alleviation, economic diversification and income generation. The book "Green Initiatives and Sustainable Development" is a reference book which covers various aspects of environmental problems including their causes and effects with green and sustainable solutions for these problems. The chapters in this book are written by expert authors of their fields.

About the Editor

Dr. Subhash Kumar is M.Sc. (Botany) from Meerut College, Meerut and Ph.D. from Ch. Charan Singh University, Meerut. He is CSIR-NET qualified. He has three years experience of teaching and research. He is working as Assistant Professor and Head of Department (HOD) of the Department of Botany, Ch. Chhotu Ram (P.G.) College, Muzaffarnagar. His areas of interest are Plant Physiology, Ecology and Ecophysiology. He has published several research papers and books to his credit in these areas.

ISBN

Available Online on
Learning Media Publication
Website : www.learningmedia.in

Learning Media Publication

Learning Media Publication
A-16, Aman Vihar, Mawana Road,
Opp. J.P. Academy, Meerut- 250001
Contact No. +91-8791976106
E-mail : learningmediapublicationmeerut@gmail.com
Website : www.learningmedia.in

amazon indiamart Flipkart

Code LM TR01 ₹ 650/- ($10)

Contents

1. Indias Environmental Challenges and their Solutions 1-36
   Dr. Subhash Kumar
2. Covid-19: An Emerging Zoonotic Disease of 21st Century 37-49
   Dr. Subhash Kumar
3. Alleviation of Impact of Climate Change on Agriculture 50-57
   Dr. Sandeep Kumar, Dr Avesh Kumar and Dr. Hari Om Sharma
4. Climate Change: Impact and Solution 58-60
   Dr. S. K. Singh, Dr. Krishan Pal, Dr. Hari Om Sharma, Dr. Jai Pal and Dr. Babita Patni
5. Climate Change: Key Developments From UNFCCC Cop1 to Cop 25 61-71
   Dr. Subhash Kumar, Dr. Yogendra Kumar Vikal, Dr. Sushil Kumar and Dr. Pramod Kumar
6. Sustainable Development and Green Initiatives in India 72-81
   Dr. Subhash Kumar
7. Sustainable Agriculture and Food Security 82-85
   Dr. Ombir Singh
8. Food Security 86-95
   Alice Singh, Dr. S.P. Singh, Dr. S. K. Singh
9. Sustainable Development and Rain Water Harvesting 96-100
   Deeksha Yajurvedi
10. Biodiversity and Conservation 101-110
    Dr. Pradeep Kumar
11. Wild Life Conservation in India 111-136
    Dr. Subhash Kumar
12. Air Pollution : Sources, Effects and Mitigation 137-146
    Hari Om Sharma, Sandeep Kumar, S. K. Singh, Pradeep Kumar
13. Air Pollution Control Devices and Techniques 147-153
    Bhupendra Singh and Sunder Singh
14. Biotechniques to Minimize the Impact of Air Pollution 154-158
    Dr. Rahul Rathi
15. Water Pollution 159-162
    Manisha Singhal
16. Water Treatment Technology 163-171
    Dr. Subhash Kumar
17. Eco friendly Approach to Wastewater Treatment 172-176
    K. Anita

15

WATER POLLUTION

Manisha Singhal
Assistant Professor and Head, Department of Chemistry RG (PG) College, Meerut

Chapter Content

- ...ction
- ...er Pollution
- ...es of Pollution
- ...nents of Polluted Water
- ...Pollution: Effects And ...ment
- ...sion
- ...ence

Introduction

In any society development and urbanization is brought about by Industrialization . Although, industrialization brings about innumerable benefits to society, but it is also a major threat to environment. As a result of it , various toxic chemicals, gases, solid wastes and microbes are released into our environment- water, air and soil. These three are the basic resources of survival on earth. Among these three nature's gifts to mankind, water is the most important component since it forms basic medium for origin of life. Water pollution has now become a big challenge, specially for developing nations, because of their great zeal for development. For sustainable development, proper measures should be taken for water pollution prevention. Factors behind high pollution of rivers are Chemicals & Effluents,Industrialisation,Failure of regulatory agencies and implementation of laws,Garbage Dumping, Washing & Sewage, Defecation and Cremation around river banks, Cremation etc. Direct sources of water pollution include effluent outfalls from factories, refineries, industries etc. that emit fluids of varying quality directly into water bodies. Indirect sources of water pollution include contaminants that enter the water supply from soils/groundwater systems and from the atmosphere via rain water. Soils and groundwaters contain the residue of human agricultural practices (fertilizers, pesticides, etc.) and improperly disposed of industrial wastes. Atmospheric contaminants are also derived from human practices (such as gaseous emissions from automobiles, factories and even bakeries).

The substances which are responsible for causing water pollution are called water pollutants.Based on source, water pollutants can be classified as follows:

9

SUSTAINABLE DEVELOPMENT AND RAIN WATER HARVESTING

Deeksha Yajurvedi
Assistant Professor Chemistry, R. G. P. G. College, Meerut

Chapter Content

- Introduction
- What Is Rain Water Harvesting?
- Advantages of Rainwater Harvesting
- Challenges of Rainwater Harvesting
- Technology
- Conclusion
- Reference

Introduction

Sustainable development is a concept and ideology which direct implications on climate change. Need for sustainable development arises due to adverse effects of urbanisation. One of the most important global environmental challenges today is the climate change which has direct implications on food crop production, water supply, health and energy security, forest ecosystem etc. A good scientific understanding as well as coordination is required for dealing the challenge of impacts of sustainable development on climate change at national as well as global level. The effective way to address climate change is to shift the sustainable development towards sustainable technologies using green chemistry approach. Green chemistry or environmental benign chemistry is the design of chemical products and processes that reduce or eliminate the use and generation of hazardous substance. It is a fundamentally new approach to environmental protection transitioning away from managing toxic chemicals at the end of the life cycle to reducing or eliminating their use altogether.

Green chemistry advocates prevention of waste designing safer chemicals, maximum incorporation of reactants and minimization of hazardous products. It is the dire need of the hour to include impacts of climate change in environmental or economic policy agendas of developing countries to which greener chemistry approach comes as an promising solution.. Building cost effective strategies and integrated institutional capacity for response to climate change would be an important step towards preservation of biodiversity.

2019 - 20

Post-COVID-19 Research Advancement in the Arena of

Agricultural, Environmental & Life Sciences

Editors

Dr. S.K. Singh

M.Sc.(Ag.), Ph.D., NET,
FATDS, FSWEFT, FHTHS, FSRDA
Head, Dept. of Genetics and Plant Breeding (Ag. Botany)
C.C.R. (PG) College, Muzaffarnagar, U.P.

Dr. S.R. Singh

M.Sc. (Ag.), Ph.D.
Scientist (Plant Protection)
K.V.K, Firozabad (U.P.)
C.S.A. University of Agriculture and Technology, Kanpur, U.P.

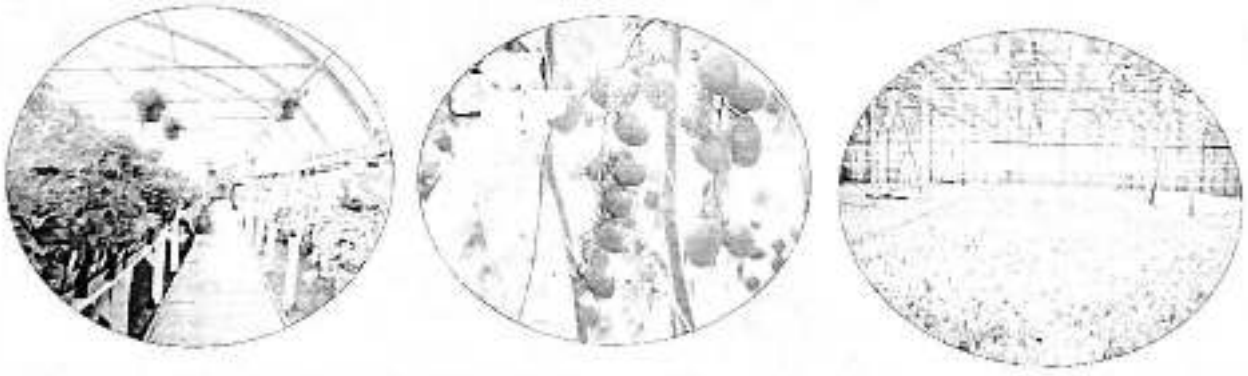

Learning Media Publication

Learning Media Publication, Meerut

Learning Media Publication

Learning Media Publication, Meerut

Regd. Office :

Learning Media Publication
A-16, Aman Vihar, Mawana Road,
Opp. J.P. Academy, Meerut- 250001
Contact No. +91-8449001390, 8791976106
E-mail : learningmediapublicationmeerut@gmail.com
Website : www.learningmedia.in

ONLINE SHOPPING
www.learningmedia.in

Post-COVID-19 Research Advancement in the Arena of Agricultural, Environmental & Life Sciences

First Edition : 2020
ISBN: 978-81-946866-6-8

Printing : **Shiv Offset Printers, Meerut**
DTP : **Learning Media DTP Unit, Meerut**

Price : ₹ 550

© Publisher

- The views expressed by the authors are their own. The editors and publishers do not own any legal responsibility or liability for the views of the authors, any omission or inadvertent errors.
- No part of this book may be reproduced or transmitted by any means/forms,electronic, mechanical, or any other way, without prior written permission from the publishers.
- Any dispute arising due to any issue/issues related to the publication of this book shall be subject to the jurisdiction of Meerut Courts only.

Contents

1. Studies and Analysis of Post COVID 19 Pandemic Impact on Indian Postharvest Horticulture Production and Supply Management 1-5
   Prashant Joshi, Upendra Kulkarni and Shyam Munje
2. Role of Plasticulture in Mitigation of Climate Extremes in Fruit Crop Production 6-13
   G. Siva Koteswara Rao, B. Srinivasulu, D. Srikanth, Anil Sharma and Safina Kosser
3. Role of Vegetables in Improving the Immunity Against Covid-19 14-18
   Satya Prakash
4. Recent Approaches of IPM: An Overview 19-26
   S. R. Singh and S. K. Singh
5. Organic Farming: Future Perspective in Agriculture 27-34
   Vivek Bhagat and Ms. Arti Keshava
6. Disease Management of Horticultural Crops Through Biopesticides 35-40
   S. Kulkarni, S. R. Singh and S. K. Singh
7. Agriculture Drought Modelling in South-Saurashtra Agro-Climatic Zone of Gujarat 41-47
   J. G. Hirapara, P. K. Singh, Kuldeep Sevak
8. Impact of Covid-19 on Sugarcane Crop 48-51
   Archana and Viresh Singh
9. Diseases Management in French Bean 52-61
   S. R. Singh and S. K. Singh
10. A Measurable Technique for the Discovery of Variations from Cutting Edge Resequencing of DNA Pools 62-72
    Shubham
11. Use of Pseudomonas Fluorescens for Disease Management 73-78
    S. R. Singh, R. K. Prajapati and S. K. Singh
12. Effect of Integrated Nutrient Management on Growth, Yield, and Quality of Garlic (*Allium sativum* L.) 79-84
    Kuldeep K. Sevak, J. G. Hirapara and Deepak Sen
13. Use of *Verticillium lecanii* for the Management of Sucking Pest in Crops 85-90
    S. R. Singh, R. K. Prajapati and S. K. Singh
14. Efficacy of Phosphorus and Psb Response in Different Varieties of Summer Moongbean and its Residual Effect on Fodder Sorghum in Western Uttar Pradesh 91-95
    R. P. Singh, R. Chandra and Bikramaditya
15. Management of Crops With Biopesticide 96-101
    R. K. Pandey, S.R. Singh and S. K. Singh
16. Management of Collar Rot of Lentil 102-105
    S. R. Singh and S. K. Singh

17. Effect of Antitranspirants on Plants- A Review 106-113
Ms. Arti Keshava and Vivek Bhagat
18. Spectral Analysis of Ambient Air Particulate Matter Using Wavelet Transforms 114-120
Anil Kumar
19. Dealing with Lockdown through Digi-Agri-Business 121-123
G.N. Yashasvi
20. Secondary Metabolites from Species of the Biocontrol Agent *Trichoderma* Species 124-126
S. R. Singh and S. K. Singh
21. *Bacillus subtilis*: An Efficient Bio Control Agent for Disease Management 127-131
S.R. Singh, R. K. Prajapati and S. K. Singh
22. Healthy and Joyful Life In A Pandemic State With Flowers 132-139
Pushpendra Singh and Yesh Pal Singh
23. Medicinal Uses of Indian Spices 140-145
Deepak Kumar
24. Orchard Establishment: Planning and Layout 146-154
Yesh Pal Singh and Pushpendra Singh
25. Nursery Management 155-159
Pratima Gupta and Vidhur Kumar
26. Production Technology of Strawberry 160-165
Pratima Gupta and Vidhur Kumar
27. Atmospheric Iodine: Origin and Fate 166-171
Upasna Devi
28. Stray Cattle In India: Challenges and Solutions 172-177
Subhash Kumar

27

ATMOSPHERIC IODINE: ORIGIN AND FATE

Upasna Devi

Department of Chemistry, R.G. College, Meerut
*Author for Correspondence: Upasna Devi, E-Mail: upasnamotla08@gmail.com

Chapter Content

- Introduction
- Sources of Atmospheric Iodine
- Season, Distribution and Mixing Ratios With Atmospheric Conditions
- Rate of Emission
- Molecular Iodine
- Photochemistry of Iodine Compounds in Atmosphere
- Aerosol Formation
- Effect of Iodine and Its Compounds in Atmosphere
- Ozone Depletion
- Effect on the Nitrogen Oxides and Hidroxyl Group Ratio
- Iodine Level at Night
- Oxidation of Elemental Mercury
- References

Introduction

Iodine is an essential dietry element for mammals.Iodine is an essential trace element in endocrine system, necessary for the production of the hormones triiodothyroxine and thyroxine in the thyroid gland. The atmospheric chemistry of iodine canbe understand by a biological cycle which involves processes **oceanic release, sea-air transfer, photochemical transformation, aerosol uptake** and deposition on the land where iodine is adsorbed onto the **soil and vegetation**. The atmospheric chemistry of iodine is important in diverse ways:

First, it provides the route for iodine, which is an essential dietary element for mammals, to be transported from its oceanic source to the continents.

Second, iodine chemistry influences the oxidizing capacity of the atmosphere i.e. the capacity of the atmosphere to oxidize, and ultimately remove, the large variety of organic and inorganic species which are emitted into it both from natural and anthropogenic sources. This occurs through thecatalytic destruction of ozone and changes to the important radical species (particularly hydroxyl (OH)) which control the oxidizing chemistry.

Third, considerable attention has been paid in the last few years to the role of iodine oxides in the formation of ultra-fine aerosol particles (operationally defined as having a diameter of 3-10 nm). The process of iodine oxide particle (IOP) production is thought to involve the recombination reactions of IO and OIO radicals to form higher oxides which then condense spontaneously to form particles.Bursts of IOPs have been observed in certain marine environments.